अध्याय–8

विनिमय बिल
(Bill of Exchange)

सीखने के उद्‌देश्य (Learning Objectives)

इस पाठ का अध्ययन करने के पश्चात् आप जान पायेंगे कि –

1. विनिमय बिल एवं प्रतिज्ञा पत्र क्या होते है?
2. विनिमय बिल एवं प्रतिज्ञा पत्र में क्या अन्तर है?
3. विनिमय बिल में कौन कौन से गुण होते है ?
4. विनिमय बिल के व्यवहारों से सम्बन्धित तकनिकी शब्द कौन कौनसे है?
5. विनिमय बिलों के व्यवहारों का लेखांकन किस प्रकार होता है?
6. प्राप्य बिल बही व देय बिल बही क्या है तथा व्यापारी के लिए किस प्रकार उपयोगी है?
7. अनुग्रह–बिल क्या है और यह किन परिस्थितियों में उपयोग किया जाता है?

व्यापार का क्षेत्र, राज्य तथा राष्ट्र तक ही सीमित नहीं रह गया है अपितु इसका क्षैत्र व्यापक होकर अन्तर्राष्ट्रीय हो गया है। व्यापार को इतना विकसित करने में साख सुविधा (उधार लेनदेनों) का महत्व दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है। आज का व्यवसायी केवल रोकड़ी व्यवहारों पर व्यापार आधारित नहीं रह गया है। परिणामस्वरूप, विनिमय साध्य विलेखों यथा–चैकों, प्रतिज्ञा–पत्रों, हुण्डियों आदि का प्रचलन बढ गया है।

साख सुविधा के दो रूप हो सकते है – (1) मौखिक तथा (2) लिखित । किसी ग्राहक के द्वारा उधार माल खरीदा जाता है, और उसके मूल्य को किसी निश्चित तारीख को चुकाने का मौखिक वचन दिया जाता है तो यह भी उधार की सुविधा कहलाती हैं। यदि इसी वचन को लिखित रूप में देता है तो वह लिखित साख कहलाती है। इसके लिखित रूप में होने पर विक्रेता के पास सबूत उपलब्ध हो जाता है कि उसने उधार माल बेचा है। दूसरी तरफ यह लिखित सबूत आसानी से हस्तान्तरित किया जा सकता है। इस प्रकार माल का उधार विक्रय करने के बदले जो लिखित सबूत विक्रेता को क्रेता से प्राप्त होता है उसे विनिमय बिल कहते हैं।

विनिमय बिल का आशय (Meaning of Bill of Exchange)

विनिमय बिल एक लिखित, हस्ताक्षर युक्त एवं शर्तरहित आदेश है जिसमे इसका लेखक किसी निशचित व्यक्ति या उसके आदेशानुसार किसी अन्य व्यक्ति या इस बिल के वाहक को एक निश्चित धनराशि का भुगतान कर दे।

भारतीय विनिमय साध्य विलेख अधिनियम 1881 की धारा (5) के अनुसार : विनिमय विपत्र एक शर्त रहित, आज्ञा सहित, लिखित एवं हस्तान्तरित विलेख है। जिसमें बिल लिखने वाला किसी व्यक्ति विशेष को यह आज्ञा देता है कि वह एक निश्चित रकम व्यक्ति या उसके द्वारा आदेशित व्यक्ति या वाहक को चुका दे।

विनिमय बिल की विशेषताएँ (Characteristics of Bill of Exchange)

1. यह एक शर्त रहित होता है अर्थात यह एक शर्तहीन आज्ञापत्र है।
2. विनिमय बिल लिखित में होना चाहिये।

3. विनिमय बिल पर लेखक के हस्ताक्षर होने चाहिये।
4. विनिमय बिल पर हस्ताक्षर करने वाला कोई निश्चित व्यक्ति होना चाहिये।
5. विनिमय बिल एक आज्ञापत्र होता है जो एक लेनदार द्वारा अपने देनदार पर लिखा जाता है।
6. विनिमय बिल का भुगतान एक निश्चित अवधि के भीतर करना होता है।
7. विनिमय बिल मे निश्चित राशि के भुगतान की व्यवस्था होती है।
8. निश्चित राशि का भुगतान लेखक अथवा उसके द्वारा आदेशित व्यक्ति अथवा वाहक को प्राप्त हो सकता है।

विनिमय बिल के पक्षकार (Parties of Bill of Exchange)

विनिमय बिल के तीन पक्षकार होते है। ये निम्नलिखित है –

1. **लेखक (Drawer) :** जो व्यक्ति बिल लिखता है अथवा भुगतान का आदेश देता है वह बिल का लेखक कहलाता है। वह व्यक्ति या तो लेनदार होता है या विक्रेता होता है जो कि माल का विक्रय करता है।
2. **स्वीकारकर्त्ता (Acceptor or Drawee) :** माल को खरीदने वाला ही बिल का स्वीकारकर्त्ता होता है। यह देनदार या केता होता है।
3. **प्राप्तकर्त्ता (Payee) :** यह वह व्यक्ति होता है जो निश्चित राशि को प्राप्त करता है अथवा पाने वाला ही प्राप्तकर्त्ता कहलाता है। कई बार लेखक व प्राप्तकर्त्ता एक ही व्यक्ति होता है। लेकिन यदि बिल को बैक से भुना लिया जाय या बेचान कर दिया जाता है तो बैक या जिसको बिल बेचान किया गया है वह प्राप्तकर्त्ता हो जाता है।

विनिमय बिल का प्रारूप

₹ 50,000 — जोधपुर, 1 मई 2010

स्टाम्प

उपर्युक्त तिथि के 3 माह बाद मुझे या मेरे आदेशित व्यक्ति को 50,000 रूपये जिसका प्रतिफल प्राप्त हो चुका है। भुगतान कीजिए

प्रकाश – साझेदार
शर्मा एण्ड संस

To,
अनिल तिवारी
ब–59, नागौर

विनिमय बिलों का महत्व अथवा लाभ :– (Advantages of Bill of Exchange)

1. **कानूनी प्रलेख:** यह एक वैद्यानिक प्रलेख है यदि स्वीकारकर्त्ता इस बिल का भुगतान नहीं करता है तो इस प्रलेख के माध्यम से कानूनी रूप से भुगतान प्राप्त करना आसान हो जाता है।
2. **भुनाने की सुविधा :** यदि बिल के प्राप्तकर्त्ता को देय तिथि से पहले भुगतान प्राप्त करना हो तो वह इसे बैंक से भुना (Discount) सकता है।
3. **हस्तान्तरित करना आसान :** इसे ऋण के भुगतान के रूप में अन्य व्यक्ति को आसानी से हस्तान्तरित किया जा सकता है।
4. **भुगतान की निश्चित तिथि** : विनिमय–बिल के भुगतान की तिथि निश्चित होती है अतः व्यापारी को बार–बार अपने देनदार से भुगतान नहीं मांगना पड़ता है।
5. **भविष्य की योजना बनाने में सहायक** : व्यापारी को विनिमय बिलों की सहायता से यह पता होता है कि किस तारीख को कितना रूपया प्राप्त होगा, जिससे वह व्यापार की नीतियां आसानी से बना सकता है।
6. **विदेशी भुगतान करने में सुविधा:** विनिमय बिल के माध्यम से विदेशी व्यापार मे भुगतान देना व लेना सुविधाजनक हो जाता है। इसके द्वारा विदेशी मुद्रा को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने की कठिनाई और जोखिम से छुटकारा मिलता है।
7. **क्रेता के लिये सुविधा** : बिल स्वीकार करने पर क्रेता को भुगतान करने के लिये समय मिल जाता है।

विनिमय बिल के प्रकार (Types of Bill of Exchange)

विनिमय–बिल कई प्रकार के हो सकते है जैसा कि निम्नलिखित चित्र में दर्शाया गया है –

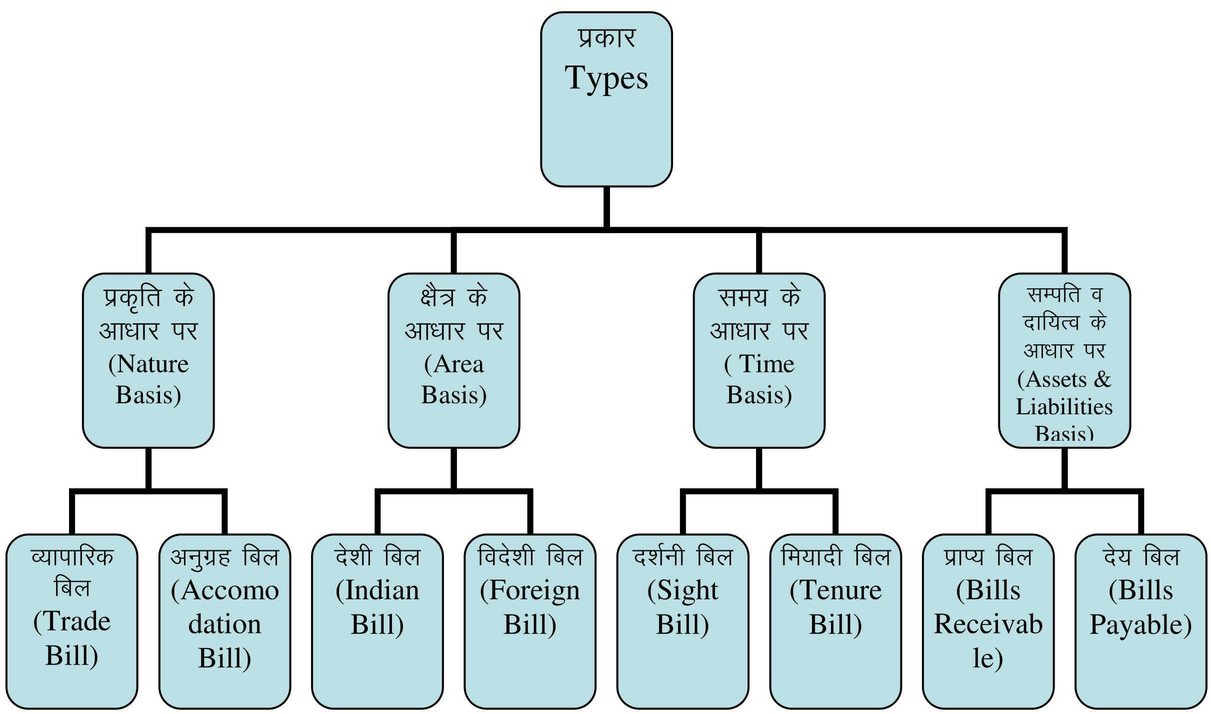

1. प्रकृति के आधार पर (On the Basis of Nature)

i. व्यापारिक बिल (Trade Bill) : उधार माल बेचने व खरीदने के परिणामस्वरूप जो बिल लिखे व स्वीकार किये जाते है उन्हें व्यापारिक बिल कहते है।

ii. अनुग्रह बिल (Accomodation Bill) : एक व्यापारी द्वारा दूसरे व्यापारी की आर्थिक सहायता करने के उद्वेश्य से जो बिल लिखे व स्वीकार किये जाते है उन्हें अनुग्रह बिल कहते है। इसमें माल का उधार क्रय–विक्रय नहीं होता है।

2. क्षैत्र के आधार पर (On the Basis of Area)

i. **देशी बिल (Indian Bill)** : जो बिल देश की सीमाओं के भीतर लिखे व भुगतान किये जाते है देशी बिल कहलाते है।

ii. **विदेशी बिल (Foreign Bill) :** जो बिल एक देश में लिखे जाते तथा उनका भुगतान अन्य देशो में होता है उन्हें विदेशी बिल कहते है।

3. समय के आधार पर (On the Basis of Time)

i. **मांग या दर्शनी बिल (Sight Bill) :** ऐसे बिल जिनका भुगतान मॉगने पर स्वीकारकर्त्ता द्वारा किया जाता है दर्शनी बिल या देखनहार बिल कहलाते है।

ii. **मियादी बिल (Tenure Bill) :** वे बिल जिनका भुगतान एक निश्चित तिथि के बाद या बिल में उल्लेखित तिथि को या उसके बाद निश्चित अवधि में करना होता है मियादि बिल कहलाते है। उदाहरणार्थ बिल लिखने की तिथी से 3 माह बाद, 90 दिन बाद आदि के बिल अथवा देखने के 90 दिन बाद मियादी स्वीकृतियों के उदाहरण है।

4. सम्पत्ति व दायित्व के आधार पर (On the Basis of Assets & Liabilities)

i. **प्राप्य बिल (Bill Receivable) :** जो व्यक्ति बिल लिखता है उसके लिये विनिमय बिल एक सम्पत्ति के रूप में होता है अर्थात जैसे ही बिल पर देनदार (क्रेता) की स्वीकृति मिल जाती है यह लेखक की सम्पत्ति हो जाती है। स्पष्टतया बिल की राशि प्राप्त करने का अधिकार धारक को होता है तथा धारक के लिये एक बिल प्राप्य बिल (B/R) ही होता है। जिसे वह अपने चिट्ठे में सम्पत्ति पक्ष में दिखाता है।

ii. **देय बिल (Bill Payble) :** जिस व्यक्ति को बिल में उल्लेखित राशि का भुगतान करना होता है उसके लिये यह बिल देय बिल कहलाता है तथा वह ऐसे बिलो की कुल राशि को चिटट्े के दायित्व पक्ष में दिखाता है।

प्रतिज्ञा पत्र (Promissory Note)

प्रतिज्ञा पत्र एक ऐसा लिखित एवं हस्ताक्षर युक्त वचन है जिसमे इसका लेखक (क्रेता अथवा देनदार) एक निश्चित व्यक्ति या उसके आदेशानुसार किसी अन्य व्यक्ति को एक निश्चित धनराशि चुकाने की प्रतिज्ञा करता है। जिसे हम प्रतिज्ञा–पत्र कहते है।

भारतीय विनिमय साध्य विलेख अधिनियम 1881 की धारा (4) के अनुसार : प्रतिज्ञा पत्र एक ऐसा लिखित विलेख (बैंक नोट या करेन्सी नोट को छोड़कर) है जिस पर इसका लेखक हस्ताक्षर करके शर्तरहित यह वचन देता है कि वह एक निश्चित व्यक्ति को या उसके आदेशानुसार किसी व्यक्ति या उस विलेख के वाहक को एक निश्चित धनराशि का भुगतान कर देगा।

प्रतिज्ञा – पत्र की विशेषताऐं (Characteristics of Promissing Note)

1. प्रतिज्ञा पत्र एक लिखित विलेख है।
2. यह लेखक द्वारा हस्ताक्षरित है।
3. यह शर्तरहित होता है।
4. इसमें ऋणी, ऋणदाता को भुगतान करने की प्रतिज्ञा करता है।
5. इसमें देय राशि निश्चित होती है।
6. इसके मूल्य के अनुसार इस पर स्टाम्प लगे होने चाहिए।
7. इस पत्र को बेचान किया जा सकता है।
8. इसमे स्वीकृति की आवश्यकता नहीं होती है।
9. इसमे किसी व्यक्ति को या उनके द्वारा आदेशित व्यक्ति को मॉग पर या एक निश्चित अवधि के पश्चात् भुगतान किया जाता है।

प्रतिज्ञा–पत्र का प्रारूप

₹ 30,000 — जोधपुर

स्टाम्प — दिनांक 1 मई 2010

इस तिथि के दो माह पश्चात् मै द्वारका प्रसाद को या उसके आदेशित व्यक्ति को 30,000 रूपये देने की प्रतिज्ञा करता हूँ जिसका प्रतिफल प्राप्त हो चुका है।

हस्ताक्षर
अशोक कुमार शर्मा
ब – 59, लढ़ा कालोनी, जोधपुर

सेवा मे,
द्वारका प्रसाद
विजय भवन
मारवाड़ मून्डवा
जिला – नागौर

प्रतिज्ञा पत्र के पक्षकार (Parties to a Promissory Note)

(1) लेखक (Maker) : यह वह व्यक्ति होता है जो प्रतिज्ञा पत्र को लिखता है और इस पर उसके हस्ताक्षर होते है।

(2) प्राप्तकर्त्ता (Payee): यह वह व्यक्ति होता है जो भुगतान प्राप्त करता है।

प्रतिज्ञा पत्र मे कोई स्वीकारकर्त्ता (Acceptor) नहीं होता है क्योकि लेखक स्वंय ही भुगतान करने का उत्तरदायी होता है।

विनिमय पत्र एवं प्रतिज्ञा पत्र में अन्तर (Difference between Bill of Exchange and Promissory Note)

क्रम संख्या	अन्तर का आधार	विनिमय बिल (Bill of Exchange)	प्रतिज्ञा–पत्र (Promissorty Note)
1	पक्षकार	इसमें तीन पक्षकार होते है। 1.लेखक 2. स्वीकारकर्त्ता एवं 3. प्राप्तकर्त्ता	इसमें दो पक्षकार होते है। 1. लेखक तथा 2. प्राप्तकर्त्ता
2	लेखक	इसे ऋणदाता या माल के विक्रता द्वारा लिखा जाता है।	इसे ऋणी (Debtors) द्वारा लिखा जाता है।
3	आदेश व प्रतिज्ञा	इसमें भुगतान का आदेश दिया जाता है।	इसमें भुगतान की प्रतिज्ञा की जाती है।
4	स्वीकृति	इसमें स्वीकारकर्त्ता अपनी स्वीकृति देता है।	इसमें स्वीकारकर्त्ता की स्वीकृति लेना आवश्यक है।
5	वाहक को देय	वाहक को देय विनिमय बिल लिखा जा सकता है किन्तु मॉग पर वाहक को देय विनिमय बिल नहीं लिखा जा सकता है।	रिजर्व बैंक तथा केन्द्रीय सरकार के अतिरिक्त कोई भी व्यक्ति वाहक को देय प्रतिज्ञा पत्र नहीं लिख सकता है।
6	अनादरण की सूचना	विनिमय बिल का अनादरण अस्वीकृति के कारण हो या भुगतान न करने के कारण, अनादरण की सूचना उससे संबंधित सभी पक्षकारों को दी जानी आवश्यक है।	प्रतिज्ञा–पत्र अनादरण की सूचना इसके लेखक को देने की आवश्यकता नही होती है।
7	दायित्व की प्रकृति	विनिमय बिल के लेखक का दायित्व गौण एवं सशर्त होता है।	प्रतिज्ञा पत्र के लेखक का दायित्व प्राथमिक एवं पूर्ण या शर्तरहित होता है।
8	सशर्त विलेख	विनिमय–बिल कभी सशर्त नहीं लिखा जा सकता है।किन्तु विनिमय बिल का स्वीकर्त्ता धारक की सहमति से प्रतिज्ञा पत्र को सशर्त स्वीकार कर सकता है क्योकि वह विनिमय बिल का निर्माता नहीं होता है।	प्रतिज्ञा पत्र के लेखक या निर्माता की स्थिति विनिमय बिल के स्वीकर्त्ता की स्थिति से मेल खाती है किन्तु वह प्रतिज्ञा पत्र में कभी भी भुगतान का सशर्त वचन नहीं दे सकता है।

विनिमय–बिल के सम्बन्ध में तकनीकी भाब्दावली

1. बिल की अवधि (Term of Bill): यह वह अवधि होती है जिसमें बिल का स्वीकारकर्त्ता बिल की राशि का भुगतान उसके लिखने की तिथी से एक निश्चित अवधि के बाद करता है। दर्शनी बिलों का भुगतान देखते ही करना होता है लेकिन मुद्रती बिलों के भुगतान की एक निश्चित अवधि होती है। इस अवधि के समाप्ति के पश्चात् इस बिल का भुगतान होता है।

2. अनुग्रह के दिन (Days of Grace): विनिमय–बिल की भुगतान तिथी निर्धारित करते समय उसकी देय तिथी में तीन दिन और जोड़ दिये जाते है। यह तीन दिन ही अनुग्रह दिवस कहलाते है।

3. परिपक्वता तिथि (Date of Maturity): जिस दिन को भुगतान देय होता है उसमे तीन दिन अनुग्रह दिवस के रूप में जोड़ दिये जाते हैं उस तिथी को भुगतान तिथी कहते हे। परिवक्ता तिथी को सार्वजनिक अवकाश होने पर जैसे दिपावली, होली, 26 जनवरी, 15 अगस्त, रविवार आदि हो तो ऐसी स्थिति में इस बिल की भुगतान तिथी अवकाश से पूर्व कार्य दिवस को परिपक्व हुआ माना जायेगा। परिपक्वता तिथी को अचानक अवकाश घोषित हो जाने पर बिल का भुगतान अगले कार्य दिवस में किया जायेगा।

4. द□ानी बिल (Bill at sight) : वह बिल जिसका भुगतान मॉगने पर या देखते ही करना होता है उसे दर्शनी बिल या देखनहार बिल कहते है।

5. बिल का परक्रामण (Negotiation of Bill): जब कोई बिल या प्रतिज्ञा पत्र किसी अन्य व्यक्ति को हस्तान्तरित करने पर वह उस बिल का धारक बन जाता है तो उसे बिल या प्रतिज्ञा पत्र का परक्रामण कहते है। यह दो प्रकार से किया जाता है। 1. जो प्रलेख वाहक को देय होते है उनका केवल सुपुर्दगी द्वारा हो जाता है। 2.जिन विनिमय–बिलों या प्रतिज्ञा पत्रो पर हस्तान्तरित करने वाले व्यक्ति को इसके पृष्ठ भाग पर अपने हस्ताक्षर करने पड़ते है वह बेचान द्वारा परक्रामण कहलाता है।

6. बेचान (Endorsement): बिल के धारक द्वारा अपने रूपये पाने का अधिकार किसी अन्य व्यक्ति को हस्तान्तरित कर दिया जाता है तो इसे बेचान कहते है। बेचान करने में बेचान करने वाले व्यक्ति के हस्ताक्षर अवश्य होने चाहिये। विनिमय बिल का बेचान स्वामी द्वारा या बिल का भुगतान प्राप्त करने का अधिकार रखने वाले व्यक्ति द्वारा किया जा सकता है। एक पत्र पर अनेक बार बेचान किया जा सकता है।

7. बिल का भुनाना (Discounting of Bill): बिल के लेखक को बिल की देय तिथी से पूर्व यदि रूपये की आवश्यकता है तो वह इसे बैक से बट्टे पर भुनाकर रूपया प्राप्त कर सकता है। बैक द्वारा जितने समय पूर्व उस बिल का भुगतान किया जा रहा है उस अवधि का ब्याज (बट्टा) काटकर शेष राशि बिल के धारक को दे देता है जिसे बिल का भुनाना कहते है।

8. बिल का अनादरण होना (Dishonour of Bill) : जब बिल का स्वीकारकर्त्ता बिल का भुगतान करने से मना कर देता है तो उसे बिल का अनादरण कहते है। बिल का अनादरण निम्नलिखित प्रकार से हो सकता है 1 जब विनिमय बिल स्वीकार नही किया जाय 2. बिल का देय तिथी पर भुगतान न होना।

9. बिल का देय तिथी से पूर्व भुगतान करना (Retirement of Bill): बिल का भुगतान उसकी देय तिथी पर किया जाता है लेकिन यदि बिल के स्वीकारकर्त्ता के पास पहले धन की व्यवस्था हो जाती है और बिल का लेखक या प्राप्तकर्त्ता कुछ रूपया छोड़ने को तैयार हो जाता है, जो प्रायः शेष अवधि के ब्याज के बराबर होता है। इसे बिल का देय तिथी से पूर्व भुगतान करना कहते है।

10. बिल का नवीनीकरण (Renewal of Bill):बिल की देय तिथी पर स्वीकारकर्त्ता बिल का भुगतान करने में असमर्थ होता है तब वह बिल के लेखक से इस आशय का अनुरोध करता है कि वर्तमान बिल को रद्द करके उसके स्थान पर आगे की तिथी का नया बिल लिख दिया जाय। उस अवधि का जितना ब्याज बनता है वह बिल की राशि में जोड़ दिया जाय या उसे नकद ले लिया जाय। यदि उसका अनुरोध स्वीकार कर लिया जाता है, तो इसे बिल का नवीनीकरण कहते है।

11. निकराई व्यय ; (Noting Charges) :- जब कोई बिल अनादरित हो जाता है तो इसका प्रमाण पत्र प्राप्त करने के लिये बिल को नोटरी पब्लिक के पास भेजा जाता है नोटरी पब्लिक इसे स्वीकारक के पास भुगतान के लिये फिर से भेजता है और इसके अस्वीकृत होने पर इस अस्वीकृत होने का कारण लिखकर अपनी मुहर लगा देता है। नोटरी पब्लिक इस कार्य के लिये जो शुल्क लेता है उसे निकरायी व्यय कहते है। विपत्र के स्वीकारक को ही यह व्यय वहन करना पड़ता है। इसकी निम्नलिखित प्रविष्टिया की जाती है–

लेखक की पुस्तको में (In the Books of Drawer)

1. स्वयं लेखक द्वारा भुगतान करनें पर	Acceptor's A/c	Dr
	To Cash A/c	
2. तृतीय पक्षकार (लेनदार) द्वारा भुगतान करने पर :	Acceptor's A/c	Dr
	To Creditor's A/c	
3. बैंक द्वारा भुगतान करने पर	Acceptor's A/c	Dr
	To Bank A/c	

बिल की भुगतान की तिथि निकालते समय ध्यान रखने वाले बिन्दुः

1. जिन महीनों में 29,30 या 31 तारीख नहीं होती यदि बिल इन तारीखों पर देय होता है तो वह उस महीने की अन्तिम तारीख को देय माना जायेगा। उदाहरण के लिए 30 जनवरी 1994 को एक माह की अवधि का लिखा हुआ बिल 28 फरवारी + अनुग्रह दिवस = यह बिल 3 मार्च 1994 को देय हुआ माना जायेगा क्याकि फरवरी के महीने मे 30 तारीख नहीं होती है।
2. 30 मई और 31 मई को लिखे गए बिल जो एक माह बाद देय है इन दोनों बिलो का भुगतान तारीख 3 जुलाई होगी।
3. यदि किसी बिल की देय तिथी अनुग्रह के 3 दिनों को जोड़ने के पश्चात् किसी रविवार या सार्वजनिक छुट्टी के दिन पड़ती है तो ऐसी स्थिति में उसकी देय तिथी 1 दिन पहले मानी जायेगी।
4. यदि किसी बिल की देय तिथि 3 दिन अनुग्रह दिवस को जोड़कर जो दिन आता है उस दिन अचानक या आपातकालीन छुट्टी घोषित कर दी जाती है तो ऐसे बिलो की देय तिथि छुट्टी के बाद वाली होगी।
5. एक वर्ष में 365 दिन होते हैं परन्तु फरवरी हर चौथे वर्ष 29 दिनों की होती है जिसे हम अधिवर्ष (Leap Year) कहते है। जिसमें 366 दिन होते है।

उदाहरण (Illustration) 1 : निम्नलिखित दशाओ में बिल की देय तिथियां ज्ञात कीजिये –

		Period
(1)	1 January, 2010,	2 Months
(2)	28 January, 2010	1 Months
(3)	30 January,2010	1 Months
(4)	30 April,2010	2 Months
(5)	30 April, 2010	3 Months

(6)	1 December,2010	60 Days
(7)	28 December,2008	2 Months

हल (Solution) :

(1) 4^{th} March, 2010

(2) 3^{rd} March, 2010

(3) 3^{rd} March, 2010

(4) 3^{rd} July, 2010

(5) 2^{nd} August, 2010

(6) 2^{nd} February, 2011

(7) 2^{nd} March, 2009

नोट :– 2008 लीप वर्ष है अतः फरवरी के 29 दिन गिने जायेगें।

लेखांकन व्यवहार (Accounting Treatment)

लेंखाकन के दृष्टिकोण से विनिमय बिलों एवं प्रतिज्ञा पत्रों को एक समान ही माना जाता है। विनिमय बिल सम्बन्धी व्यवहारों का लेखा दोहरा लेखा पद्वति को ध्यान मे रखते हुए करना चाहिये। बिल खातों को वस्तुगत खाते मानते हुए लेखा करना चाहिये। विनिमय बिल को दो भागो (1) व्यापारिक बिल तथा (2) अनुग्रह बिल में बाँटते हुए लेखा किया जाता है। व्यापारिक बिल उधार माल बेचने व खरीदने के परिणामस्वरूप लिखे व स्वीकार किये जाते है।

उदाहरणार्थ :– अ ने ब को उधार माल बेचा। अ ने ब पर बिल लिखा एवं ब ने स्वीकार कर लिया। यह अ के लिऐ प्राप्य बिल (Bill Receivable) कहलाएगा एवं ब के लिए यही विपत्र देय विपत्र (Bill Payble) कहलाएगा अलग–अलग स्थितियो में विनिमय बिल सम्बन्धी लेखांकन प्रक्रिया निम्न प्रकार अपनाई जाएगी–

(1) बिल के लिखने तथा स्वीकार करने पर (On Drawing – Accepting a Bill)

1.	लेखक की बहियों में (In Drawer's Book's)	Bills Receivable A/c To Acceptor's A/c (Being acceptance received)	Dr.
2.	स्वीकारक की बहियो में (In the Drawee's Book's)	Drawer's A/c To Bills Payable A/c (Being acceptance given)	Dr.

(2) बिल का भुगतान होने पर (On Payment of Bills)

1.	लेखक की बहियों में (In Drawer's Book's)	Cash A/c To Bills Receivable A/c (Being payment received on due date)	Dr
2.	स्वीकारक की बहियो में (In the Drawee's Book's)	Bills Payable A/c To Cash A/c (Being Payment made on due date)	Dr

उदाहरण (Illustration) 2 : 1 जनवरी 2010 को ऋचा ने ऋतिका को 1,050 का माल बेचा और दो महिने की अवधि का एक बिल लिख दिया जिसको ऋतिका ने स्वीकार कर लिया। निश्चित तिथि पर बिल का भुगतान हो गया। दोनों पक्षों की जर्नल में इन लेन–देनों की प्रविष्टि कीजिए। (On 1^{st} January 2010 Richa sold goods to Ritika for ₹ 1050

and drawn a bill payable after two months on Ritika which the later accepts. The bill was paid on due date, Enter these transaction in the Journal of both the parties)

हल (Solution) :

Journal of Richa

Date	Particular	L.F	Dr. ₹	Cr. ₹
1	Ritika A/c Dr To Sales A/c (Being goods sold on Credit to Ritika)		1050	 1050
2	Bills Receivable A/c Dr. To Ritika A/c (Being acceptance received)		1050	 1050
3	Cash A/c Dr. To Bills Receivable A/c (Being Payment of the Bill Received)		1050	 1050

Journal of Ritika

Date	Particular	L.F	Dr. ₹	Cr. ₹
1	Purchases A/c Dr To Richa A/c (Being Purchases Goods from Richa)		1050	 1050
2	Richa A/c Dr. To Bills Payble A/c (Being acceptance given)		1050	 1050
3	Bills Payble A/c Dr. To Cash A/c (Being Bill paid on due date)		1050	 1050

बिल का बेचान करना (Endorsing a Bill) : जब बिल का लेखक (Drawer) अपने ऋण का भुगतान करने के लिये बिल का बेचान ऋणदाता के पक्ष मे कर देता है। इस स्थिति में बिल बेचान पात्र (Endorsee) के पास चला जायेगा, इस पर निम्नलिखित प्रविष्टि की जायेगी–

1.	बेचान करने वाले की बहियों में (In the books of Endorser)	Endorsee's A/c Dr To Bills Receivable A/c (Being Bill endorses to Endorsee)
2.	बेचान पात्र की बहियों में (In the books of endorsee)	Bills Receivable A/c Dr To Endorser's A/c (Being Bill Receivable from Endorser.)

3. स्वीकारकर्त्ता (Acceptor) :– इसकी पुस्तको में कोई प्रविष्टि नहीं होगी क्योकि इसे एक निश्चित तिथि पर जिस व्यक्ति के पास बिल है उसे भुगतान करना है।

उदाहरण (Illustration) 3 : 1 अप्रेल 2010 को वन्दना ने एक बिल 900 रू. का तीन माह की अवधि का सुमित्रा को माल बेचने के बदले लिखा जिसको सुमित्रा ने स्वीकार करके वन्दना को लौटा दिया। 5 अप्रेल को वन्दना ने यह बिल दिपाली को एक ऋण के भुगतान में दे दिया। निश्चित तिथि पर बिल का भुगतान हो जाता है। समस्त पक्षो की जर्नल मे प्रविष्टि कीजिए। (On 1st April 2010 Vandana drew a bill on Sumitra for ₹ 900 at three month for goods sold

to Sumitra, Sumitra accepted and returned it to Vandana who endorsed it to Deepali on 5th April in Payment of a debt. The bill is duly met on the due date. Pass necessary Journal Entries in the books of all Parties)

Journal of Vandana

Date	Particular	L.F	Dr. ₹	Cr. ₹
April 1	Sumitra A/c Dr To Sales A/c (Being goods sold to Sumitra)		900	900
April 1	Bills Receivable A/c Dr. To Sumitra A/c (Being acceptance received)		900	900
April 1	Deepali A/c Dr. To Bills Receivable A/c (Being Bill endorsed to Deepali)		900	900

Journal of Sumitra

Date	Particular	L.F	Dr. ₹	Cr. ₹
April 1	Purchases A/c Dr To Vandana A/c (Being goods Purchased from Vandana)		900	900
April 1	Vandana A/c Dr. To Bills Payable A/c (Being acceptance given)		900	900
July 4	Bills Payable A/c Dr. To Cash A/c (Being Bills met on Maturity)		900	900

Journal of Deepali

Date	Particular	L.F	₹	₹
April 5	Bill Receivable A/c Dr To Vandana A/c (Being Bill received from Vandana)		900	900
July 4	Cash A/c Dr. To Bill Receivable A/c (Being Payment received on due date)		900	900

नोट :– 1. बिल के बेचान की स्वीकारक की बहियों में कोई प्रविष्टि नहीं होगी क्योकि उस पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

2. बिल के भुगतान की लेखक की बहियो में कोई प्रविष्टि नहीं होगी क्योंकि भुगतान से उसका कोई सम्बन्ध नहीं है।।

समय से पूर्व बिल को भुनाना (Discounting of the Bill before Maturity) :– यदि बिल के लेखक को रूपयो की आवश्यकता होती है। तो वह बिल को भुगतान तिथी से पूर्व ही अपने बैक या अन्य व्यक्ति से भुना लेता हैं। बैक या व्यक्ति बिल भुनाने की तिथि से बिल के भुगतान की देय तिथि तक का ब्याज काटकर शेष रूपया बिल के लेखक को दे देता है। ब्याज लेखक के लिये हानि होने के कारण वह बट्टे खाते को नाम करता है।

लेखक (Drawer) या प्राप्तकर्त्ता (Payee) की पुस्तको मे बिल भुनाने की निम्नलिखित प्रविष्टि होगी–

Bank A/c	Dr	(प्राप्त रोकड़ से)
Discount A/c	Dr	(कटौती की रकम से)
To Bills Receivable A/c		(बिल की कुल रकम से)
(Being Bill discounted with Bank)		

स्वीकारकर्त्ता (Drawee) की पुस्तको में :– इसकी पुस्तकों में कोई प्रविष्टि नहीं की जायेगी क्योकि बिल भुनाने का स्वीकारक पर कोई प्रभाव नही पड़ेगा। इसे तो निश्चित तिथि पर बिल का भुगतान करना होगा।

नोट :– 1. बिल भुनाते समय व्यक्ति के नाम को जमा न करके प्राप्य बिल खाते (Bills Receivable A/c) को जमा किया जाता है।

2. बिल भुनाने की दर वार्षिक ही समझी जायेगी।

उदाहरण (Illustration) 4 : 1 मार्च 2010 को राधारमण 3,000 ₹ का तीन महीने की अवधि का बिल अनिश पर लिखता है जिसे अनिश स्वीकार कर लेता है। 4 मार्च को राधारमण उस बिल को 5% कटौती पर अपने बैकं से भुना लेता है। निश्चित तिथि पर बिल का भुगतान हो जाता है। दोनो पक्षा की जर्नल में उपर्युक्त लेन–देनों की प्रविष्टियां कीजिये (On 1st March 2010 Radharaman draws a bill on Anish for ₹ 3000 for three months and the later accepts it. On 4th March Radharaman discounts the same at 5% with his banker. The bill is duly paid on maturity. Pass Journal entries in the books of both the parties)

Journal of Radharaman

Date	Particulars	L.F	Dr. ₹	Cr. ₹
March 1, 2010	Bill Receivable A/c Dr To Anish A/c (Being acceptance received)		3,000	 3,000
March 4, 2010	Bank A/c Dr Discount A/c Dr. To Bills Receivable A/c (Being Bill ducounted with the Bank at 5%)		2962.50 37.50	 3,000

Journal of Anish

Date	Particulars	L.F	₹	₹
1	Radharaman A/c Dr To Bills Payble A/c (Being acceptance given)		3,000	 3,000
2	Bills Payble A/c Dr To Cash A/c (Being Bill paid on the due date)		3,000	 3,000

नोट :– 1. जब तक भुनाये गये बिल का निश्चित तिथि को भुगतान न हो जाये तब तक धारक अपनी बहियों में उसकी रकम संदिग्ध ऋण (Contingent Liability) के रूप मे चिट्ठे के नीचे दिखाएगा।

2. बिल के भुगतान की लेखक (राधारमण) की बहियो में कोई प्रविष्टि नहीं होगी क्योकि बिल बैक से भुनाने के कारण निश्चित भुगतान तिथि पर बैक के पास है। अतः भुगतान बैक को मिलेगा।

अवधि से पूर्व बिल का छूट पर भुगतान करना (Retiring a bill under Rebate) :– बिल के स्वीकारकर्त्ता के पास बिल की देय तिथी से पूर्व रकम उपलब्ध हो जाती हैं तो वह बिल की देय तिथी से पूर्व बिल का भुगतान कर देता है। ऐसा करने पर वह बिल की रकम में से उतने दिन का ब्याज काट लेता है जितने दिन पहले वह बिल का भुगतान करता है। इस ब्याज को छूट (Rebate) कहते है। यह छूट (Rebate) बिल के धारक के लिये हानि तथा स्वीकारकर्त्ता के लिए लाभ होता है। इसकी प्रविष्टि दोनों पक्षों की पुस्तकों में निम्नलिखित होगी–

1.	लेखक की पुस्तकों में (In the Books of Drawer's)	Cash A/c Rebate A/c To Bills Receivable A/c (Being payment received on rebate)	Dr Dr
2.	स्वीकारक की बहियों में (In the Books of Drawee's)	Bills Payble A/c To Cash A/c To Rebate A/c (Being Bill retired under Rebate)	Dr

उदाहरण (Illustration) 5 : 1 जनवरी 2010 को कौशल्या 8,000 ₹ का माल ममता को बेचती है और उस पर 3 महीने की अवधि का बिल लिख देती है। जिसे ममता स्वीकार कर लेती है। ममता 4 जनवरी 2010 को ही 4% वार्षिक छूट पर बिल का भुगतान कर देती है। दोनों पक्षों की बहियों में लेखा कीजिये। (On 1st January 2010 Koshaliya Sales goods to mamta for ₹ 8,000 and draws a bill at three months for the amount which mamta accepts. On 4th January 2010 Mamta retires the bill under rebate of 4% Per Annum. Enter these transactions in the Journal of both the parties)

हल (Solution) :

Journal of Koshaliya

Date	Particular	L.F	Dr. ₹	Cr. ₹
2010 Jan.1	Mamta Dr To Sales A/c (Being Sold goods to Mamta)		8,000	 8,000
Jan. 1	Bills Receivable A/c Dr To Mamta (Being acceptance received)		8,000	 8,000
Jan. 4	Cash A/c Dr Rebate A/c Dr. To Bills Receivable A/c (Being Payment receivable under rebate of 4% P.A.)		7,920 80	 8,000

Journal of Mamta

Date	Particulars	L.F	Dr. ₹	Cr. ₹
2010 Jan.1	Purchases A/c Dr To Koshaliya A/c (Being Purchased goods on Credit)		8,000	 8,000

Jan. 1	Koshaliya A/c Dr To Bills Payable A/c (Being acceptance given)		8,000	 8,000
Jan. 4	Bills Payable A/c Dr To Cash A/c To Rebate A/c (Being Bill Paid under rebate of 4% P.A.)		8,000	 7920 80

बिल बैक में संग्रह के लिए भेजना (Sending the bill to bank for collections) :— अलग—अलग देय तिथियों के बिल लेखक को प्राप्त होने पर बिल का लेखक इन बिलो को अपने बैंक में जमा करा देता है ताकि बैक निश्चित तिथियों पर इन बिलों की रकम संग्रह कर उसके खाते मे जमा कर देता है। बैक इस सेवा के बदले कुछ शुल्क लेता है जिसे बैक शुल्क कहते है। यह बैक शुल्क लेखक के लिये हानि होने के कारण इसे नाम किया जाता है।

लेखक (Drawer) की बहियो में :—

1-	जब बिल बैंक मे जमा कराया जाता है—	Bills for collection A/c To Bills Receivable A/c (Being Bill deposited in to Bank for collection)	Dr
2-	जब बिल का संग्रह हो जाता है और बैक शुल्क काटने की सूचना देता है—	Bank A/c Bank Charges A/c To Bills for collection A/c (Being Bank charges on the collection of bills)	Dr Dr
3-	जब बिल अप्रतिष्ठित हो जाता है —	Acceptors Personal A/c To Bills for collection A/c To Bank A/c (Noting Charges) (Being Bill dishonoured)	Dr

उपरोक्त प्रविष्टियों के स्थान पर व्यापारी निम्नलिखित प्रविष्टियां भी कर सकता है—

1-	जब बिल बैक मे जमा कराया जाता है—	Bank A/c To Bills Receivable A/c (Being Bill deposited in to Bank for collection)	Dr
2-	जब बिल का संग्रह हो जाता है और बैंक शुल्क काटने की सूचना देता है—	Bank Charges A/c To Bank A/c (Being Bank charges charged by bank)	Dr
3-	जब बिल अप्रतिष्ठित हो जाता है—	Acceptors Personal A/c To Bank A/c (Being Bill dishonoured)	Dr

स्वीकारकर्त्ता (Drawee) बिल बैंक में जमा करवाने की कोई प्रविष्टि नहीं करेगा।

1-	भुगतान की प्रविष्टि	Bill Payble A/c To Cash A/c (Being Bill Paid on due date)	Dr

बैक : बिल जमा की कोई प्रविष्टि नहीं करेगा। रूपया संग्रह हो जाने पर बिल राशि को ग्राहक के खाते मे जमा करेगा।

बिल का अप्रतिष्ठित होना (Dishounour of the Bill) :— स्वीकारक भुगतान की निश्चित तिथि को बिल का भुगतान करने से मना कर देता है तो ऐसे बिल को अप्रतिष्ठित या अनादरित (Dishounoured) हुआ बिल कहते है। बिल के लेखक की पुस्तकों में निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टियां होती है —

1.	जब बिल के लेखक द्वारा स्वीकारक के पास बिल भुगतान के लिये भेजा जाय–	Acceptors A/c (बिल की राशि + व्यय) Dr To Bill Receivable A/c(बिल की राशि) To Cash A/c (नोटिंग व्यय) (Being Bill dishonoured on due date and noting charges paid)
2.	तृतीय पक्षकार (लेनदार) को बेचान किये गये बिल का स्वीकारक द्वारा अनादरण करने पर	Acceptors A/c Dr To Creditors A/c To Cash A/c (Being Bill dishonoured and noting charges paid)
3.	बैंक से भूनाये गये बिल का स्वीकारक द्वारा अनादरण करने पर	Acceptors A/c Dr To Bank A/c (Being discounted Bill dishonoured and noting charges paid)
4.	बैक के पास संग्रहण के लिए भेजे गये बिल का स्वीकारक द्वारा अनादरण करने पर	Acceptors A/c (बिल की राशि) Dr To Bills for Collection A/c(नोटिंग चार्जेज) To Cash A/c (Being Bill dishonoured and noting charges paid)

स्वीकारक की बहियों में बिल के अप्रतिष्ठित होने पर प्रविष्टियां

Bill payable A/c Dr. (बिल की रकम से)
Noting Charges A/c Dr. (नोटिंग चार्जेज की राशि से)
To Drawer's A/c (बिल व चार्जेज की रकम से)
(Being Bill dishonoured and noting charges paid by drawer)

निकराई व्यय (Noting Charges)

जब कोई बिल अनादरित हो जाता है तो इसका प्रमाण प्राप्त करने के लिये बिल को नोटेरी पब्लिक के पास भेजा जाता है। नोटरी पब्लिक इसे स्वीकारक के पास भुगतान के लिये फिर से भेजता है और इसके अस्वीकृत होने पर इस पर अस्वीकृत होने का कारण लिखकर अपनी मुहर लगा देता है। नौटरी पब्लिक इस कार्य के लिये जो शुल्क लेता है उसे नौटरी चार्जेज कहते है। विपत्र के स्वीकारक को ही यह व्यय वहन करना पड़ता है। इसकी निम्नलिखित प्रविष्टियां की जाती है :–

लेखक की पुस्तकों में लेखांकन

1	स्वयं लेखक द्वारा भुगतान करने पर	Acceptor's A/c Dr. To Cash A/c
2	तृतीय पक्षकार/लेनदार द्वारा भुगतान करने पर	Acceptor's A/c Dr. To Creditor's A/c
3	बैंक द्वारा भुगतान करने पर	Acceptor's A/c Dr. To Bank A/c

स्वीकारक की पुस्तकों में लेखांकन

1	स्वीकारक की पुस्तकों में सभी परिस्थितियों में केवल निम्नलिखित प्रविष्टि ही की जायेगी	Noting Charges/Trade Exp. A/c Dr. To Drawer's A/c

उदाहरण (Illustration) 6 :

रामनिवास 1100 रूपये से अशोक का ऋणी था जिसके लिए अशोक उस पर तीन महिने की अवधि का एक बिल लिख देता है, जिसे रामनिवास स्वीकार कर लेता ह।े निश्चित तिथी को रामनिवास बिल का भुगतान करने से इनकार कर देता है, अशोक 10 रूपये निकराई या प्रमाणन खर्च चुकाता है । उपर्युक्त लेनदेनों को रामनिवास व अशोक की जर्नल में लिखिए –

Ramniwas was indebted to Ashok for ₹ 1100 Ashok draws a bill for this amount at three months date which Ramniwas accepts. On the due date Ramniwas refuses to pay the bill, Ashok pays Noting charges ₹ 10. Make necessary Journal entries in the books of Ramniwas and Ashok.

हल (Solution)

Journal of Ashok

Date	Particulars	LF	Debit (₹)	Credit (₹)
	Bills Receivable A/c Dr.		1100	
	To Ramniwas			1100
	(Being acceptance received)			
	Ashok A/c Dr.		1110	
	To Bills Receivable A/c			1100
	To Cash A/c			10
	(Being Bill dishonoured and noting charges paid.)			

Journal of Ramniwas

Date	Particulars	LF	Debit (₹)	Credit (₹)
	Ashok A/c Dr.		1100	
	To Bills Payable A/c			1100
	(Being acceptance given)			
	Bills Payable A/c Dr.		1100	
	Noting charges A/c Dr.		10	
	To Ashok			1110
	(Being Bill dishonoured and noting charges paid by drawer)			

बिल का नवीनीकरण (Renewal of the Bill) : कई बार बिल का स्वीकारक भूगतान तिथी पर बिल का भूगतान करने में वितीय कठिनाई का अनुभव करता है ऐसी स्थिति में वह बिल के लेखक से देय तिथी से पूर्व ही पुराने बिल को निरस्त करके नया बिल आगे की तिथी के लिये लिखने का आग्रह करता है। यदि लेखक इस आग्रह को स्वीकार कर लेता है तो इस आगे की अवधि के लिये स्वीकारक ब्याज भी देता हैं। यदि यह ब्याज की रकम स्वीकारक द्वारा नकद में चुका दी जाती है तो नया बिल पुरानी राशी से ही लिखा जायेगा और यदि ब्याज की रकम स्वीकारक नकद नहीं चुकाता है तो पुराने बिल की रकम में ब्याज की राशि को जोड़कर नया बिल लिखा जाता है, इसे बिल का नवीनीकरण कहा जाता है। बिल के नवीनीकरण सम्बन्धी प्रविष्टियां निम्नलिखित प्रकार से की जाएगी –

लेखक की पुस्तकों में लेखांकन

1	पुराने बिल को रद्द करने के लिये	Acceptor's A/c Dr. To Bills Receivable A/c (Being Old bill cancelled)

2	यदि पुराने बिल में से कुछ रकम प्राप्त हो जाये तो	Cash A/c Dr. To Acceptor's A/c (Being Part payment received)
3	नये बिल पर लगाये जाने वाले ब्याज के लिए, यदि ब्याज रोकड़ प्राप्त हो जाता है	Cash A/c Dr. To Interestt A/c (Being interest on renewal received in cash)
	यदि ब्याज रोकड़ प्राप्त नहीं होता है तो	Acceptor's A/c Dr. To Interest A/c (Being interest on renewal debited to acceptor)
	नया बिल लिखने पर	Bills receivable A/c Dr. To Acceptor's A/c (Being acceptance received for the new bill together with interest)

स्वीकारक की बहियों में लेखांकन

1	पुराने बिल को रद्द करने के लिये	Bills payable A/c Dr. To Drawer's A/c (Being the Old bill cancelled)
2	यदि पुराने बिल में कुछ रकम प्राप्त हो जाये तो	Drawer's A/c Dr. To Cash A/c (Being Part payment received)
3	नये बिल पर लगाये जाने वाले ब्याज के लिए यदि ब्याज रोकड़ चुका दिया जाय है	Interest A/c Dr. To Cash A/c (Being interest paid in cash)
	यदि ब्याज रोकड़ नहीं चुकाया जाय	Interest A/c Dr. To Drawer's A/c (Being interest on renewal)
	नये बिल को स्वीकार करने पर	Drawer's A/c Dr. To Bills Payable A/c (Being acceptance given to a new bill with interest)

उदाहरण (Illustration) 7 :

1 अप्रेल 2010 को आनन्द 2200 ₹ का माल अनीश को बेचता है और तीन महिने की अवधि का एक बिल लिख देता है जिसे अनीश स्वीकार कर लेता है। निश्चित तिथी पर अनीश बिल का भुगतान करने में असमर्थता प्रकट करता है और आनन्द से प्रार्थना करता है कि पुराने बिल को रद्द करके नया बिल तीन महिने की अवधि का पुराने बिल की रकम तथा 5 प्रतिशत वार्षिक ब्याज सहित लिख दे। नये बिल का निश्चित तिथी पर भूगतान हो जाता है। दोनों पक्षों की जर्नल में आवश्यक प्रविष्टियां कीजिये ।

(On the 1st April 2010 Anand sells goods to Anish for ₹ 2200 and draw a bill for the same at three months date which Anish accepts. On the due date Anish express his inability to meet the bill and requests Anand to cancel the old bill and draw a new bill at three months for the amount of the original bill plus interest at 5 % per annum. The new bill is duly met on maturity. Pass necessary Journal entires in the books of both the parties.)

हल Solutions :

Journal of Anand

Date	Particulars	LF	Debit (₹)	Credit (₹)
April 1, 2010	Anish A/c Dr. To Sales A/c (Being sold goods to Anish)		2200	2200
April 1, 2010	Bills Receivable A/c Dr. To Anish (Being acceptance received)		2200	2200
July 4, 2010	Anish Dr. To Bills Receivable A/c (Being old bill cancelled on Renewal)		2200	2200
July 4, 2010	Anish Dr. To interest (Being interest on renewal debited to Anish)		28	28
July 4, 2010	Bills Receivable A/c Dr. To Anish (Being acceptance received for the new bill including interest)		2228	2228
Oct. 7, 2010	Cash A/c Dr. To Bills Receivable A/c Being payment of new bill receive on maturity)		2228	2228

Journal of Anish

Date	Particulars	LF	Debit ₹	Credit ₹
April 1, 2010	Purchases A/c Dr. To Anand (Being goods purchased from Anand)		2200	2200
April 1, 2010	Anand Dr. To Bill Payable A/c (Being acceptance given)		2200	2200
July 4, 2010	Bills payable A/c Dr. To Anand (Being old bill cancelled on Renewal)		2200	2200
July 4, 2010	Interest A/c Dr. To Anand (Being interest on renewal credited to Anand)		28	28
July 4, 2010	Anand Dr. To Bills Payable A/c (Being acceptance given to the new bill including interest)		2228	2228
Oct. 7, 2010	Bills Payable A/c Dr. To cash A/c (Being new bill paid on maturity)		2228	2228

उदाहरण (Illustration) 8 :

1 जनवरी 2010 को अ ने 10000 ₹ का माल ब को बेचा और 4 माह की अवधि का बिल उस पर लिख दिया, जिसको ब ने स्वीकार करके लौटा दिया । अ ने उस बिल को अपने बैंक से 6 प्रतिशत वार्षिक ब्याज की दर से 4 जनवरी को भुना लिया । भुगतान की तिथी को ब ने बिल का भुगतान करने में असमर्थता प्रकट की। बैंक ने प्रमाणन का खर्चा

20 ₹ चुकाया । ब ने अ से प्रार्थना की कि वह 6000 ₹ आंशिक भुगतान में प्राप्त कर लें और शेष रकम के लिए 5 प्रतिशत वार्षिक ब्याज सहित तीन महिने की अवधि का बिल लिख दे। अ ने उसका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और नया बिल लिख दिया गया जिसे ब ने स्वीकार कर लिया। 1 अगस्त 2010 को ब दिवालिया हो जाता है और उसकी जायदाद से ₹ मे 50 पैसे ही प्राप्त होते है उपर्युक्त लेनदेनों की दोनों पक्षों की जर्नल में प्रविष्टियां कीजिए तथा अ की खाताबही में ब का खाता भी बनाइये ।

(On 1st January 2010 A sold goods to B for ₹ 10000 and drew bill on 4 months duration for the same which B accepted. On January 4, A discounted the bill with his bankers at 6% p.a. on the due date B express his inability to make payment of the bill. The bank paid noting charges ₹ 20. B requested A to take ₹ 6000 in part payment and draw a new bill at 3 months for the balance and interest there on at 5% p.a. A agrees to this proposal and the new bill was drawn and was accepted by B. On 1st August 2010 B becomes insolvent and a dividend of 50 paisa in a rupee was received from his estate. Pass the necessary journal entries in the books of both the parties and prepare B's account in A's Ledger.)

हल (Solution)

Journal of A

Date	Particulars	LF	Debit (₹)	Credit (₹)
Jan. 1, 2010	B Dr. To Sales A/c (Being sold goods to B)		10000	 10000
Jan. 4, 2010	Bills Receivable A/c Dr. To B (Being acceptance received)		10000	 10000
Jan. 4, 2010	Bank A/c Dr. Discount A/c Dr. To Bill Receivable A/c (Being Bill discounted with the bank at 6 p.a.)		9800 200	 10000
May 4, 2010	B Dr. To Bank (Being Bill dishonoured on due date and noting charged paid)		10020	 10020
May 4, 2010	Cash A/c Dr. To B (Being part payment received from B)		6000	 6000
May 4, 2010	B Dr. To Interest A/c Being interest on renewal charged to B at 5% p.a.)		50	 50
May 4, 2010	Bills Receivable A/c Dr. To B (Being acceptance received from B for the new bill)		4050	 4050
Aug. 7, 2010	Cash A/c Dr. Bad debts A/c Dr. To Bill Receivable A/c (Being a dividend of 50 paisa in a rupee received from B)		2040 2040	 4080

Journal of B

Date	Particulars	LF	Debit (₹)	Credit(₹)
Jan. 1, 2010	Purchase A/c Dr. To A (Being purchased goods from A)		10000	 10000
Jan. 4, 2010	A Dr. To Bills Payable A/c (Being acceptance given to A)		10000	 10000
May 4, 2010	Bill Payable A/c Dr. Noting Charge A/c Dr. To A (Being Bill dishonoured on due date and noting charges paid by A)		10000 20	 10020
May 4, 2010	A Dr. To Cash A/c (Being part payment made to A)		6000	 6000
May 4, 2010	Interest A/c Dr. To A (Being interest on renewal charged by A)		50	 50
May 4, 2010	A Dr. To Bills payable A/c (Being acceptance given to the new bill with interest)		4080	 4080
Aug. 7, 2010	Bill Payable A/c Dr. To Cash A/c To Deficiency A/c (Being Bill met on due date by paying 50 paisa in a rupee)		4080	 2040 2040

Ledger of A

Dr. **B's Account** Cr.

Date	Particulars	J.F.	Amount(₹)	Date	Particulars	J.F.	Amount(₹)
2010				2010			
Jan.1	To Sales A/c		10000	Jan.4	By B.R. A/c		10000
May4	To Bank A/c		10020	May4	By Cash A/c		6000
May4	To Interest A/c		50	May4	By B/R A/c		4070
			20070				20070

उदाहरण (Illustration) 9 :

शिवप्रकाश ने दीपक को 13 जून 2010 को 16000 ₹ का माल बेचा जिसके लिये दीपक ने 4000 ₹ के 4 बिल क्रमशः 2, 3, 6 और 8 महिने की अवधि के स्वीकार किये । शिवप्रकाश ने पहला बिल भुगतान तिथी तक अपने पास रखा। दूसरे बिल को संग्रहण के लिए बैंक में भेज दिया गया । तीसरे बिल का अरूण शर्मा को बेचान कर दिया गया। चौथे बिल को बैंक से 12 प्रतिशत वार्षिक बट्टे पर भुना लिया गया। पहले बिल का भुगतान, भुगतान तिथी पर कर दिया गया। दूसरे बिल के सम्बन्ध में स्वीकारक ने दीपक से 23 सितम्बर 2010 को सम्पर्क किया और 3000 रूपये अदा किये और उससे शेष राशि के लिए नया बिल 12 प्रतिशत वार्षिक ब्याज के साथ लिखने की प्रार्थना की । इस बिल की अवधि 3 महीने की थी और बिल का भुगतान तिथी पर भुगतान कर दिया जैसेकि इससे पहले तीसरे बिल का किया था । दीपक 31 दिसम्बर 2010 को दिवालिया घोषित कर दिया गया और शिवप्रकाश के बैंक ने चौथे बिल के सम्बन्ध में उसी दिन उसके

खाते को नाम कर दिया । दीपक की जायदाद से 15 जनवरी 2011 को 1 ₹ में से 50 पैसे ही वसूल किये जा सके। शिवप्रकाश और दीपक की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियॉ कीजिए।

(Shiv Prakash sold goods to Deepak for ₹ 16000 on 13th June 2010 for which the later accepted 4 bills of ₹ 4000 each payable after 2month, 3month, 6month and 8 months respectively, Shiv Prakash retained the first bill till maturity. The second bill was sent to bank for collection. The third bill was endorsed infavour of Arun Sharma. The fourth bill was discounted with his banks at 12% per annum. The first bill was met on the due date. As regards the second bill, the drawee approached Shiv Prakash on 23rd September 2010, paid him ₹ 3000 and requested him to draw a fresh bill for the balance, together with interest at 12% per annum. The term of this bill was 3 month and the bill was duly paid on maturity as had been the third bill before it. Deepak was declared involvent on 31st December 2010 and Shiv Prakash's banker accordingly debited Shiv Prakash on that day in respect of the fourth bill. Only 50 paisa in a rupee could be recovered from Deepak's estate on 15th Jan. 2011. Make necessary Journal entries in the books of Mr. Shiv Prakash and Deepak.)

हल (Solutions): **Journal of Shiv Prakash**

Date	Particulars	LF	Debit (₹)	Credit (₹)
2010 Jan.13	Deepak Dr. To Sales A/c (Being sold goods to Deepak)		16000	 16000
Jan.13	Bills Receivable A/c Dr. To Deepak (Being four bills for 4000 each received from Deepak payable 2, 3, 4, and 8 months after date)		16000	 16000
Jan. 13	Bills for Collection A/c Dr. To Bills Receivable A/c (Second bill payable 3 months after date sent to bank for collecion)		4000	 4000
Jan. 13	Arun Sharma Dr. To Bills Receivable A/c (Being third bill endorsed to Arun Shrma)		4000	 4000
2010 Jan.13	Bank A/c Dr. Discound A/c Dr. To Bills Receivable A/c (Being fourth bill for ₹ 4000 discounted @12% per annum)		3680 320	 4000
Aug.16	Cash A/c Dr. To Bills Receivable A/c (Being amount received for first bill)		4000	 4000
Sept.23	Deepak Dr. To Interest A/c To Bills for Collection A/c (Being interest due on ₹ 1000 @ 12% for 3 months for new bill to be accepted.		4030	 30 4000
Sept.23	Cash A/c Dr. Bills Receivable A/c Dr. To Deepak (Being received from Deepak ₹ 3000 in cash and a bill for ₹ 1030)		3000 1030	 4030

Dec 26	Cash A/c Dr. To Bills Receivable A/c (Being amount received against fifth bill for ₹ 1030)		1030	 1030
Dec.31	Deepak Dr. To Bank A/c (Being fourth bill discounted with the bank to be treated dishonoured same day)		4000	 4000
2011 Jan 15	Cash A/c Dr. Bad Debts A/c Dr. To Deepak (Being 50% of the amount due from Deepak written off as a bad and the balance received)		2000 2000	 4000

Journal of Deepak

Date	Particulars	LF	Debit (₹)	Credit (₹)
2010 Jan.13	Purchase A/c Dr. To Shiv Prakash (Being purchased goods from Shiv Prakash)		16000	 16000
Jan.13	Shiv Prakash Dr. To Bills Payable A/c (Being four bills payable of ₹ 4000 each issued to shiv prakash payable 2,3,6 and 8 months after date)		16000	 16000
Aug.16	Bills Payable A/c Dr. To Cash A/c (Being first bill payable met on the due date)		4000	 4000
Sept. 23	Bills payable A/c Dr. To ShivPrakash (Being part payment make to A)		4000	 4000
Sept.23	Shiv Prakash Dr. Interest A/c Dr. To Cash A/c To Bills Payable A/c (Being amount paid and fresh bill issued with interest to Shiv Prakash in lieu of the 2nd bill)		4000 30	 3000 1030
Dec. 16	Bills Payable A/c Dr. To Cash A/c Being third bill for ₹ 4000 met on the due date))		4000	 4000
Dec. 26	Bills Payable A/c Dr. To Cash A/c (Being fifth bill paid)		1030	 1030
Dec. 31	Bills Payable A/c Dr. To Shiv Prakash (Being the fourth bill treated cancelled due to insolvency)		4000	 4000
2011 Jan.15	Shiv Prakash Dr. To Cash A/c To Deficiency (Being paid 50 paisa in a rupee in full settlement)		4000	 2000 2000

अनुग्रह या सहायतार्थ बिल (Accommodation Bills)

एक व्यापारी द्वारा दूसरे व्यापारी की आर्थिक सहायतार्थ हेतु जो बिल बिना किसी प्रतिफल के लिखे व स्वीकार किये जाते है उन्हें अनुग्रह बिल कहते है। इसमें एक व्यापारी को थोड़े समय के लिये रूपयों की आवश्यकता होती है वह अपने प्रतिष्ठित व्यापारी मित्र पर बिल लिखता है जिसे दूसरा व्यापारी स्वीकार कर लेता है। इस बिल को लिखने वाले व्यापारी द्वारा बैंक से भुनवा लिया जाता है। बिल की भुगतान तिथी से पहले बिल का लेखक स्वीकारकर्ता को बिल की राशि भेज देता है भुगतान तिथी पर बिल का स्वीकारकर्ता व्यापारी बैंक को बिल की राशि का भुगतान कर देता है। विनिमय साध्य प्रलेख अधिनियम 1881 की धारा 43 में इस प्रकार के विपत्रों की वैधानिक स्थिति को स्पष्ट किया गया है। अनुग्रह बिलों की निम्नलिखित विशेषताएँ होती है (Characteristics of Accommodation Bills)

1. ये बिल एक व्यापारी द्वारा दूसरे व्यापारी की सहायतार्थ लिखे जाते है ।
2. ये बिल बिना प्रतिफल के स्वीकार किये जाते है ।
3. इन बिलों का प्रयोग प्रतिष्ठित व्यापारी ही कर सकते है ।
4. इस प्रकार के बिलों में विनिमय साध्यता का गुण होता है
5. यह बिल व्यापारिक सौदों को नहीं दर्शाते है ।

अनुग्रह तथा व्यापारिक बिलों में अन्तर (Difference between Accommodation and Trade Bills)

1. व्यापारिक बिल उधार माल खरीदने व बेचने के परिणामस्वरूप लिखे व स्वीकार किये जाते है जबकि अनुग्रह बिल एक व्यापारी अपने मित्र व्यापारी की आर्थिक सहायतार्थ हेतु लिखे व स्वीकार किये जाते है ।
2. व्यापारिक बिल में लेखक द्वारा स्वीकारक को उचित प्रतिफल दिया जाता है जबकि अनुग्रह बिल में कोई प्रतिफल नहीं दिया जाता है ।
3. व्यापारिक बिल ऋण का प्रमाण है जबकि अनुग्रह बिल आर्थिक सहायता हेतु लिखा जाता है ।
4. व्यापारिक बिल को बैंक से भुनाने पर रकम लेखक व्यापारी स्वयं रखता है जबकि अनुग्रह बिल भुनाने पर प्राप्त रकम आपस में पक्षकारों के मध्य बांटी जाती है ।
5. व्यापारिक बिल के अनादरण हो जाने पर न्यायालय की सहायता से रकम को वसूल किया जा सकता है जबकि अनुग्रह बिल की रकम न्यायालय द्वारा वसूर नहीं की जा सकती है ।

अनुग्रह बिलों का लेखांकन (Accounting of Accommodation Bills)

अनुग्रह बिलों के सम्बन्ध में जर्नल प्रविष्टियां व्यापारिक बिलों के समान ही की जाती है जैसे बिल लिखने, स्वीकार करने, बेचान करने अथवा बैंक से बट्टे पर भुनाने के लिये जो प्रविष्टियां करते थे लेकिन कुछ व्यवहार जो अनुग्रह बिलों के लिये कुछ अतिरिक्त प्रविष्टियां की जाती है जो निम्न है :-

1. भुनाये गये बिल की राशि का आदान प्रदान करना –

अनुग्रह बिल को प्राप्त करने के तुरन्त बाद लेखक व्यापारी उसे बैंक से भुना (Discount) लेता है समझौते के अनुसार राशि का उपयोग करता है। दोनों पक्षकार बट्टे की रकम को उस अनुपात में आपस में बांट लेते हे जिस अनुपात में वह प्राप्त राशि का उपयोग करते है। जब लेखक प्राप्त राशि का एक हिस्सा स्वीकारकर्ता को भेजता है जब दोनों की पुस्तकों में निम्नलिखित प्रविष्टियां की जायेगी –

लेखक (Drawer) की पुस्तकों में :-

Acceptor's A/c Dr.
To Discount A/c
To Cash A/c
(Being amount remitted to acceptor)

स्वीकारकर्ता (Drawee) की पुस्तकों में :–

Cash A/c Dr.
Discount A/c Dr.
To Drawer's A/c
(Being proportionate amount received)

परिपक्वता पर बिल के लेखक द्वारा राशि स्वीकारकर्ता को भेजने पर
लेखक (Drawer) की पुस्तकों में

Acceptor's A/c Dr.
To Cash A/c
(Being proportionate amount sent)

स्वीकारकर्ता (Drawee) की पुस्तकों में :–

Cash A/c Dr.
To Drawer's A/c
(Being share amount received)

नोट :– अनुग्रह बिल में स्वीकारकर्ता के दिवालिया होने पर प्रविष्टि ठीक उसी प्रकार की जायेगी जो कि व्यापारिक बिलों के स्वीकारकर्ता के दिवालिया होने पर की जाती है ।

अनुग्रह बिल लिखने की दो परिस्थितियां हो सकती है :–

1. अनुग्रह बिल किसी एक व्यापारी की सहायतार्थ हेतु लिखा हो ।
2. अनुग्रह बिल पारस्परिक सहयोग एवं सहायता के लिये लिखा हो
    1. केवल एक बिल लिखा जाय – प्राप्त रकम को एक निश्चित अनुपात में बांट लिया जाय।
    2. दोनों व्यापारी द्वारा एक दूसरे पर बिल लिखे व स्वीकार किये जाये ।

1. जब एक व्यापारी की सहायतार्थ हेतु लिखा हो – इसमें सहायता प्राप्त करने वाला व्यापारी बिल लिखता है तथा सहायता प्रदान करने वाला व्यापारी उसे स्वीकार करता है। बिल का लेखक स्वीकृति के बाद इस बिल को अपने बैंक से बट्टे पर (Discount) भुना लेता है तथा अपनी अल्पकालीन वित्तीय आवश्यकता को पूरा करने के बाद देय तिथी पर बिल की राशि स्वीकारकर्ता को भेज देता है :–

उदाहरण (Illustration) 10 :

बी. की सहायता करने के उद्देश्य से 8000 ₹ के बी द्वारा लिखित बिल को ए तीन माह के लिये स्वीकार करता है। बी इस बिल को 7840 ₹ के लिये बैंक से बट्टा कराता है। बी देय तिथी से पूर्व ए को 8000 ₹ भेज देता है। ए देय तिथी पर यथोचित रूप से बिल का भुगतान कर देता है। दोनों पक्षों की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियां कीजिये । (In order to accommodate B, A accepts the bill of ₹ 8000 drawn by B for three month. B discount the bill for ₹ 7840 from his banker. Before the due date B remits a sum of ₹ 8000 to A. A meets the bill in due course. Pass the journal entries in the books of two parties.)

हल (Solutions) :

Journal of "B"s

Date	Particulars	LF	Debit (₹)	Credit (₹)
	Bills Receivable A/c Dr.		8000	
	To A			8000
	(Being A's acceptance received)			
	Bank A/c Dr.		7840	
	Discount A/c Dr.		160	
	To Bills Receivable A/c			8000
	(Being the bill discounted with bank)			
	A's Dr.		8000	
	To Cash A/c			8000
	(Being amount of the bill reimbursed to A)			

Journal of "A"s

Date	Particulars	LF	Debit (₹)	Credit (₹)
	B's A/c Dr.		8000	
	To Bills Payable			8000
	(Being acceptance given)			
	Cash A/c Dr.		8000	
	To B'sA/c			8000
	(Being money reimbursed by B)			
	Bills Payable A/c Dr.		8000	
	To Cash A/c			8000
	(Being bill met on maturity)			

2. अनुग्रह बिल पारस्परिक सहयोग एवं सहायता के लिये लिखा हो –

1. केवल एक बिल लिखा जाय तथा प्राप्त रकम को एक निश्चित अनुपात में बांट लिया जाय :– इस स्थिति में एक व्यापारी आपसी सहायता के लिये दूसरे व्यापारी पर बिल लिखता है । दूसरा व्यापारी इसे स्वीकार करके पहले व्यापारी को लौटा देता है जो इसे बैंक से भुना कर एक निश्चित अनुपात में राशि दूसरे व्यापारी के पास भेज देता है तथा एक हिस्सा स्वयं रख लेता है। बट्टे की हानि को दोनों व्यापारी प्राप्त रकम के अनुपात में बांट लेते है। देय तिथी से पूर्व लेखक अपने हिस्से की रकम स्वीकारकर्ता को भेज देता है । जो अपने हिस्से की रकम मिलाकर बिल का भुगतान कर देता है ।

उदाहरण (Illustration) 11 :

एक्स तथा वाई परस्पर सहयोग हेतु अनुग्रह विपत्र का प्रयोग करते है। एक्स 32500 ₹ का एक बिल वाई पर लिखता है । वाई बिल को स्वीकार करने के उपरान्त एक्स को लौटा देता है। एक्स इसे 31000 ₹ के लिये बैंक से भुना लेता है। एक्स तथा वाई प्राप्त राशि को क्रमशः ⅔ व ⅓ के अनुपात मं बांटते है। देय तिथी पर वाई अपना हिस्सा एक्स को भेज देता है तथा वाई बिल का यथाविधि भुगतान कर देता है। उपर्युक्त व्यवहारों को एक्स व वाई की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टिया कीजिए। (X and Y use accommodation bill for mutual accommodation. X drawn a bill on Y for ₹ 32500. Y accepts the bill and return to X. X discounts the bill from his banker for ₹ 31000. Proceeds are to be shared by X and Y in the proportion of ⅔ and ⅓ respectively. On the due date X remits his proportion of money to Y

and Y meets the bill. For the above transactions pass Journal entries in the books of X and Y.)

हल (Solution) :

Journal of "X"

Date	Particulars	LF	Debit (₹)	Credit (₹)
	Bills Receivable A/c Dr. To Y's A/c (Being bill drawn for accommodation)		32500	 32500
	Bank A/c Dr. Discount A/c Dr. To Bills Receivable A/c (Being bill discounted)		31000 1500	 32500
	Y's A/c Dr. To Cash A/c To Discount A/c (Being amont remitted to Y and ⅓ discount charged to him)		10833	 10333 500
	Y's A/c Dr. To Cash (Being Cash remitted to Y)		21667	 21667

Journal of "Y"

Date	Particulars	LF	Debit (₹)	Credit (₹)
	X's A/c Dr. To Bills Payable (Being acceptance given)		32500	 32500
	Cash A/c Dr. Discount A/c Dr. To X's A/c (Being ⅓ proceed and discount adjusted)		10333 500	 10833
	Cash A/c Dr. To X's A/c (Being Cash received from X)		21667	 21667
	Bills Payable A/c Dr. To Cash A/c (Being acceptence met)		32500	 32500

(ii) दोनों व्यापारी एक दूसरे पर बिल लिखे व स्वीकार करे

जब दोनों व्यापारी को रकम की आवश्यकता हो तथा दोनों एक–दूसरे पर बिल लिखे व स्वीकार करें तो दोनों व्यापारी अपने–अपने बिलों को अपने बैंक से बट्टे पर भुना लेते है। प्राप्त रकम का बिल की निश्चित तारीख तक उपयोग करने के बाद बिलों की राशि को भुगतान तिथि से पूर्व एक–दूसरे को भेज देते है तथा इन बिलों का नियत तिथि पर बैंक को भुगतान कर दिया जाता है। बट्टे की राशि को उसी अनुपात में वहन किया जाता है जिस अनुपात में रकम प्राप्त की गयी है।

उदाहरण (Illustration) 12 : 12 जनवरी 2010 को राम ने रहीम पर परस्पर सहायतार्थ 6,000 ₹ का बिल 2 महीने की अवधि के लिए लिखा। 14 जनवरी को राम ने 5,920 ₹ की राशि के बदले भुना लिया और आधी रकम रहीम को भेज दी 18 जनवरी 2010 को रहीम ने 6,000 ₹ का बिल तीन महीने की अवधि के लिए लिखा जिसे राम ने स्वीकार

कर लिया । 16 फरवरी, 2010 को रहीम ने 5,280 ₹ में बैंक से भुना लिया और आधी रकम राम को भेज दी । राम और रहीम बट्टे को बराबर बांटने पर सहमत हो गए ।

भुगतान तिथी पर राम ने अपनी स्वीकृति का भुगतान कर दिया परन्तु रहीम भुगतान करने में असफल रहा । राम ने तीन महीने की अवधि का नया बिल पुराने बिल के बदले 10% वार्षिक ब्याज सहित रहीम पर लिखा जिसे रहीम ने स्वीकार कर लिया । 3 जून को रहीम दिवालिया हो गया और 4 जुलाई 2010 को 1 ₹ में 80 पैसे के हिसाब से अन्तिम भुगतान प्राप्त हुआ । राम और रहीम की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियां कीजिये । (On 1st Jan 2010 Ram drew a bill for ₹ 6,000/- at two month after date on Rahim for mutual benefit on 4th Jan Ram discounted the bill against the amount of ₹ 5,920/- and remitted half the proceeds to Rahim on 8th February 2010. Rehim drew and Ram accepted a bill at 3 months after date for ₹ 6,000/-. On 16 February, 2010. Rahim discounted the bill for ₹5,280/- and remitted half the proceeds to Ram. Ram and Rahim agreed to share discount equally. At maturity Ram met his acceptance but Rahim failed to meet. Ram drew and Rahim accepted a new bill at three months for the old bill and interest at 10% P.A. on 3rd June Rahim become insolvent and a final dividend 80 paisa in a rupee was received against the payment on 4th July 2010. Pass journal entries in the books of Ram and Rahim.)

हल (Solution) :

Journal of Ram

Date	Particulars	L.F.	Dr.(₹)	Cr. (₹)
2010 Jan 1	Bills Receivable A/c Dr To Rahim (Being Acceptance recived for mutual benefit)		6000	6000
Jan.4	Cash A/c Dr Discount A/c Dr To Bills Receivalbe A/c (Being Bill Discounted)		5920 80	6000
Jan.4	Rahim Dr To Cash A/c To Discount A/c (Being half the proceeds of bill remitted with discount		3000	2960 40
Feb.8	Rahim Dr To Bills payable A/c (Being acceptance given far matual benfit)		6000	6000
Feb.16	Cash A/c Dr Discount A/c Dr To Rahim (Being Received half of the proceeds of bill with discount)		2640 360	3000
Mar.4	Rahim Dr To Bank A/c (Being Acceptance given by Rahim dishonoured)		6000	6000
Mar.4	Rahim Dr. To Interest A/c (Being interest charged for 3 months @ 10% p.a on ₹6000)		150	150

Mar.4	Bills Receivable A/c Dr. To Rahim (Being New bill with interest accepted by Rahim)		6150	6150
May.11	Bills payable A/c Dr. To cash A/c (Being payment of bill met on due date)		6000	6000
Jun.7	Rahim Dr. To Bills Receivable A/c (Being bill dishonoured by Rahim due to insolvancy)		6150	6150
July.4	Cach A/c Dr Bad Debts A/c Dr To Rahim (Being Final dividend of 80 Paise in a rupee was received and balance treated as bd.)		4920 1230	6150

Journal of Rahim

Date	Particularls	L.F.	Dr. (₹)	Cr. (₹)
2010 Jan.1	Ram Dr To Bills payable A/c (Being Acceptance given for mutual benefit)		6000	6000
Jan.4	Cash A/c Dr Discount A/c Dr To Ram (Being Half the proceeds of bill received with discount)		2960 40	3000
Feb.8	Bills Receivalbe A/c Dr To Rahim (Being Acceptance received for mutual benefit)		6000	6000
Feb.16	Cash A/c Dr Discount A/c Dr To Bills Receivable A/c (Being bill discounted)		5280 720	6000
Feb.16	Ram Dr To cash A/c To Discount A/c (Being half of the proceeds of bill remitted with discount)		3000	2640 360
Mar.4	Bills Payable A/c Dr To Ram (Being bill dishonoured)		6000	6000
Mar.4	Interest A/c Dr To Ram (Interest payable for 3 months on ₹6000)		150	150
Mar.4	Ram Dr To Bills payable A/c (Being acceptance given)		6150	6150
June 7	Bills payable A/c Dr To Ram (Being bill dishonoured due to insolvency)		6150	6150

July.4	Ram Dr To Cash A/c To Deficiency A/c (Being final dividend of 80 paise in a rupee was paid)		6150	 4920 1230

उदाहरण (Illustration) 13 : मिनाक्षी ⅔ व ⅓ के अनुपात में दोनों की पारस्परिक सहायतार्थ सुमन पर एक 1,200 ₹ का बिल लिखती है। जिसे सुमन स्वीकार कर लेती है। मिनाक्षी बिल को 1,128/– ₹ में भुनाती है तथा ⅓ हिस्सा सुमन को भेज देती है। भुगतान तिथि से पूर्व पहले बिल के भुगतान के लिए राशि की व्यवस्था करने के लिए सुमन मिनाक्षी पर 1,6,80/– ₹ का बिल लिखती है। दूसरे बिल को 1,632/– ₹ में भुना लिया जाता है। जिसकी सहायता से पहले बिल का भुगतान किया जाता है तथा 288/– ₹ मिनाक्षी को भेज दिये जाते है। दूसरे बिल की भुगतान तिथि से पूर्व मिनाक्षी दिवालिया हो जाती है तथा सुमन 1/– ₹ में 50 पैसे के हिसाब से अन्तिम भुगतान प्राप्त करती है। मिनाक्षी और सुमन की पुस्तकों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिए तथा सुमन की खाता बही में मिनाक्षी का खाता बनाइएँ । (Meenaxi draws a bill for ₹ 1,200/- and Suman accepts the same for mutual accommodation of both of them to the extent of ⅔ & ⅓ Meenaxi discount the same for ₹1,128/- & remits ⅓ of proceeds to suman. Before the Due Date Suman draws another Bill for ₹1680/- on meenaxi in order to provide funds to meet the first bill. The second bill is Discounted for ₹1632/- with the help of which the first bill is met & ₹288/- Remittted to meenaxi before the due date of the second bill. Meenaxi become insolvent & suman received a dividend of 50 paise in a rupee in full satisfaction. Pass the necessary Journal entries in the books of Meenaxi and Suman and prepare Meenaxi's account in suman's ledger.

हल (Solution) : **Journal of Meenaxi**

Date	Particulars	L.F.	Dr. ₹	Cr.₹
1	Bills Receivable A/c Dr To Suman's A/c (Being bill accepted by suman)		1200	 1200
2	Bank A/c Dr Discount A/c Dr To Bills Receivable A/c (Being bill discounted with the bank)		1128 72	 1200
3	Suman A/c Dr To Bank A/c To Discount A/c (Being ⅓ rd of the proceeds of the Bills remitted to suman & ⅓ rd of the Discount charged)		400	 376 24
4	Suman's A/c Dr To Bills payable A/c (Being acceptance given)		1680	 1680
5	Bank A/c Dr Discount A/c Dr To suman's A/c (Being the amount received from suman on his discounting our acceptance and ⅔rd discount debited to us)		288 32	 320
6	Bills payable A/c Dr To suman (Being bill dishonoured)		1680	 1680

7	Sunan's A/c Dr To Bank A/c To Deficiency A/c (Being the payment of the amount due by paying 50 paise in a rupee in full settlement)		1120	560 560

नोट : दूसरे बिल के बट्टे में मिनाक्षी के हिस्से की गणना : ₹

	₹
दोनों बिलों पर कुल बट्टा (72+48)	120
मिनाक्षी का कुल बट्टे में ⅔ हिस्सा	80
घटाईये – पहले बिल के बट्टे की राशि में हिस्सा	48
दूसरे बिल के बट्टे की राशि में हिस्सा	32

Journal of Suman

Date	Particulars	L.F.	Dr.₹	Cr.₹
1	Meenaxi Dr To Bills payable A/c (Being acceptance given)		1200	1200
2	Bank A/c Dr Discount A/c Dr To Meenaxi (Being ⅓rd proceeds received from meenaxi)		376 24	400
3	B/R A/c Dr To Meenaxi (Being bill accepted by Meenaxi)		1680	1680
4	Bank A/c Dr Discount A/c To B/R A/c (Being bill discounted)		1632 48	1680
5	Meenaxi Dr To Bank A/c To Discount A/c (Being proceeds remitted and ⅔rd of the discount charged)		320	288 32
6	Bills Payable A/c Dr To Bank A/c (Being acceptancemet on the Due Date)		1200	1200
7	Meenaxi Dr To Bank A/c (Being meenaxi's acceptance dishonoured on his insolvency		1680	1680
8	Bank A/c Dr Bed debts A/c Dr To Meenaxi (Being 50 Paise in a Rupee received and the balance of the amount Due written off as bad debts)		560 560	1120

Dr. **Meenaxi's Account** Cr.

	₹			₹
To Bills payable A/c	1200		By Bank A/c	376
To Bank A/c	288		By Discount A/c	24
To Discount A/c	32		By Bills Receivable A/c	1680
To Bank A/c	1680		By Bank A/c	560
			By Bad Debts A/c	560
	3200			3200

विनिमय बिल बहियाँ (Books of Bills of Exchange) : बड़े–बड़े व्यावसायिक संस्थानों में जहाँ विनियम बिलों के माध्यम से बहुत बड़ी संख्या में लेन–देन होते है, वहाँ इन लेनदेनों का लेखा प्रारम्भिक सहायक बहीयों में किया जाता है, उन्हें विनियम बिल बहियाँ कहते है। यह सहायक बहियां दो प्रकार की होती है :–

(i) **प्राप्य बिल बही (Bills receivable Book)**

(ii) देय बिल बही (Bill payable Book)

(i) **प्राप्य बिल बही** :– इस बही में उन बिलों का लेखा किया जाता है जो बिल व्यापारी को प्राप्त होते है अर्थात् इन बिलों की रकम व्यापारी को प्राप्त होगी । यह इस बही के योग से ज्ञान होगा । प्राप्य बिल बही का प्रारूप निम्नलिखित है :–

Bills Receivable Book

Sl.N.	Date of Receipts	From Whom Received	Drawer	Acceptor	Dateof Bill	Term	Due Date	L.F.	Amount	Remarks
1.	2.	3.	4.	5.	6.	7.	8.	9.	10.	11.

2. देय बिल :– इस बही में उन बिलों का लेखा किया जाता है जिनकी रकम उसके द्वारा देय है। अर्थात् इन बिलों की व्यापारी द्वारा स्वीकार किया जाता है। व्यापारी द्वारा भुगतान की जाने वाली स्वीकृत बिलों की राशि व्यापार का दायित्व है क्योकि एक निश्चित अवधि के पश्चात् इन स्वीकृत बिलों की राशि का भुगतान संबंधित लेनदार को करना पड़ेगा ।

देय बिल बही का प्रारूप निम्नलिखित है :–

Sl.N.	Date of Given	To Whom Given	Payee	Where payable	Date of Bill	Term	Due Date	L.F.	Amount	Remarks
1.	2.	3.	4.	5.	6.	7.	8.	9.	10.	11.

प्राप्य बिल बही एवं देय बिल बही से खतौनी :– प्राप्य बिल बही की खतौनी प्राप्य बिल खाते तथा बिल देने वाले व्यक्ति के खाते में की जाती है। जब बिल आता है तो प्राप्य बिल खाते को नाम करेगें और जो व्यक्ति बिल स्वीकार करता है उसका व्यक्तिगत खाता जमा किया जायेगा । प्राप्य बिल खाते में प्रत्येक बिल की खतौनी अलग–अलग नहीं की जाती बल्कि प्राप्य बिल बही के योग को एक साथ खताया जाता है और विवरण के खाने में "To sundaries as per B/R Book" लिख दिया जाता है। देय बिल बही की खतौनी देय बिल खाते तथा सम्बन्धित प्राप्त कर्ता के व्यक्तिगत खाते में की जाती है क्योंकि व्यक्तिगत खाता प्राप्त करने वाला होता है अतः व्यक्तिगत खाते को नाम किया जाता है और देय बिल खाते को जमा किया जाता है। देय बिल खाते में प्रत्येक बिल की अलग अलग खतौनी नहीं होकर देय बिल बही का योग एक साथ खताया जाता है और विवरण के खाने में "By Sundries as Per Bills Payable Book" लिख दिया जाता है।

उदाहरण (Illustration) 14 : निम्नलिखित व्यवहारों को बिल बहियों में लिखिए तथा खाता बही में खतौनी कीजिय (Enter the following transaction in bill Books & Post them into ledger) :–

2010

6 जनवरी को माहेश्वरी ब्रदर्स ने दो महीने की अवधि का 5,000/– ₹ का बिल स्वीकार कर लिया । (Maheshwari Bros. accepted a bill for ₹5,000/- at 2 months date)

7 जनवरी को राधारमण ट्रेडिंग कम्पनी से 2 माह की अवधि का बिल 7,250/– ₹ का प्राप्त हुआ । (Received a bill from Radharaman Trading Company at 2 month Date for ₹7250/-)

8 जनवरी को अनिश द्वारा लिखे गये 6250 ₹ के दो माह की अवधि के बिल को स्वीकार किया (Accept a bill at two months for ₹ 6250 draws by Anish)

9 जनवरी को अशोक कुमार पर तीन महीने की अवधि का एक बिल 4800 ₹ का लिखा जो उसने स्वीकार करके लौटा दिया (Received a bill for ₹ 4800 at three months duly accepted by Ashok).

10 जनवरी को द्वारीकेश का ड्राफ्ट 8,400/– ₹ का तीन महीने की अवधि का स्वीकार किया जिसका भुगतान दीपक को करना है। (Accepted Dwarikesh draft at three month for ₹8400/- the payment of which good begiven to Deepak)

15 जनवरी को राधा ब्रदर्स द्वारा लिखा गया 3,000/– का एक महीने की अवधि का बिल स्वीकार किया। (Accepted a bill drawn by Radha Bros. for ₹3,000/- at one month)

हल **(Solution) :**

Bills Receivable Books

Sl.N.	Date of Receipts	From Whom Received	Drawer	Acceptor	Date of Bill	Term	Due Date	L. F.	Amount ₹	Remarks
	2010									
1	Jan.6	Maheshwari Bros.	Self	Maheshwari Bros.	Jan.6	2 month	Mar.9		5000	
2	Jan.7	Radharaman Trading Co.	Self	Radharman trading Co.	Jan.7	2 month	Mar.10		7250	
3	Jan.9	Ashok	Self	Ashok	Jan.9	3 month	Apr.12		4800	
									17050	

Bills Payable Books

S.N.	Date of Given 2010	To Whom given	Payee	Where payable	Date of Bill	Term	Due Date	L. F.	Amount ₹	Remarks
1	Jan.8	Anish	Self	-	Jan.8	2month	Mar.11		6,250	
2	Jan.10	DwariKesh	Self	-	Jan.10	3month	Apr.10		8400	
3	Jan.15	Radha Bros	Self	-	Jan.15	1month	Feb.12		3000	
									17,650	

LEDGER

Dr. **Bills Receivable Account** Cr.

Date	Particulars	J.F.	Amount ₹	Date	Particulars	J.F.	Amount ₹
2010 Jan 10	To Sundaries as per B/R Book		17,050				

Dr. **Maheshwari Bros. Account** Cr.

Date	Particulars	J.F.	Amount ₹	Date	Particulars	J.F.	Amount ₹
				2010 Jan.6	By B/R Ac.		5,000

Dr. **Radharman Trading Co. Account** Cr.

Date	Particulars	J.F.	Amount ₹	Date	Particulars	J.F.	Amount ₹
				2010 Jan.7	By B/R Ac.		7,250

Dr. **Ashok's Account** Cr.

Date	Particulars	J.F.	Amount ₹	Date	Particulars	J.F.	Amount ₹
				2010 Jan.9	By B/R Ac.		4,800

Dr. **Bills Payable Account** Cr.

Date	Particulars	J.F.	Amount ₹	Date	Particulars	J.F.	Amount ₹
				2010 Jan.15	By Sundries as par B/P Books		17,650

Dr. **Anish's Account** Cr.

Date	Particulars	J.F.	Amount ₹	Date	Particulars	J.F.	Amount ₹
2010 Jan.8	To B/P A/c		6,250				

Dr. **Dwarikesh's . Account** Cr.

Date	Particulars	J.F.	Amount ₹	Date	Particulars	J.F.	Amount ₹
2010 Jan.10	To B/P A/c		8,400				

Dr. **Radha Bros. Account** Cr.

Date	Particulars	J.F.	Amount ₹	Date	Particulars	J.F.	Amount ₹
2010 Jan.15	To B/P A/c		3,000				

सारांश

विनिमय बिल एक लिखित हस्ताक्षरयुक्त एवं शर्तरहित आदेश है जिसमें इसका लेखक किसी निश्चित व्यक्ति को यह निर्देश देता है कि वह किसी निश्चित व्यक्ति या उसके आदेशानुसार किसी अन्य व्यक्ति या इस बिल के वाहक को एक नश्चित धनराशि का भुगतान करें ।

प्रतिज्ञा पत्र एक ऐसा लिखित हस्ताक्षरयुक्त वचन है जिसमें इसका लेखक (क्रेता अथवा देनदार) एक निश्चित व्यक्ति या उसके आदेशानुसार किसी व्यक्ति को एक निश्चित धनराशि के भुगतान की प्रतिज्ञा करता है।

विनिमय बिल और प्रतिज्ञा पत्र में यह अन्तर है कि विनिमय बिल लेनदार द्वारा देनदार पर लिखा जाता है जबकि प्रतिज्ञा पत्र देनदार द्वारा लिखा जाता है। विनिमय बिल में तीन पक्षकार होते है (1) लेखक (2) स्वीकारकर्त्ता तथा (3) प्राप्तकर्त्ता

जबकि प्रतिज्ञा–पत्र में दो पक्ष होते है (1) लेखक (2) प्राप्तकर्त्ता। विनिमय बिल में भुगतान का आदेश दिया जाता है जबकि प्रतिज्ञा पत्र में भुगतान की प्रतिज्ञा की जाती है।

विनिमय बिल की विशेषताऐं है कि यह विनिमय बिल लिखित होता है, यह शर्तरहित होता है, इस पर लेखक के हस्ताक्षर होते है, विनिमय बिल पर हस्ताक्षर करने वाला निश्चित व्यक्ति होना चाहिये, यह आज्ञा पत्र होता है तथा इसका भुगतान एक निश्चित अवधि के भीतर करना होता है।

विनिमय बिल का यह लाभ है कि यह एक कानूनी प्रलेख है, इसको भुनाने में सुविधा होती है, इसको आसानी से हस्तान्तरित किया जा सकता है तथा विनिमय बिल का भुगतान निश्चित तिथी पर होता है।

एक व्यापारी द्वारा दूसरे व्यापारी की आर्थिक सहायता करने के उद्देश्य से जो बिल लिखे व स्वीकार किये जाते है उन्हे अनुग्रह बिल कहते है।

स्वयं जाँचिए

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति करे :–

(i) विनिमय विपत्र एक ....पत्रक है।

(ii) विनिमय विपत्र...द्वारा .... पर लिखा जाता है।

(iii) प्रतिज्ञा पत्र.................................... द्वारा.................................. पर लिखा जाता है।

(iv) विनिमय विपत्र के.. पक्षकार होते है।

(v) प्रतिज्ञा पत्र के.. पक्षकार होते है।

(vi) विपत्र के सन्दर्भ में बिलकर्त्ता और.............................. एक पक्षकार नहीं हो सकते है।

(vii) भारतीय भाषा में विनिमय विपत्र... कहलाती है।

(viii) ....तिथि के अंकन के लिए................................रियायती दिन विपत्र की शर्तो में जोड़े जाते है।

(ix)

स्वयं जाँचिए – 2

2. विभिन्न विपत्र के सन्दर्भ में सही एवं गलत वाक्य को पहचाने :–

(i) विनिमय विपत्र पर स्वीकार कर्ता की स्वीकृति अनिवार्य है।

(ii) विनिमय विपत्र लेनदार द्वारा लिखा जाता है।

(iii) विनिमय विपत्र प्रत्येक नकद लेन–देनों के लिए लिखा जाता है।

(iv) मांग पर देय विनिमय विपत्र को समयावधि विपत्र कहते है।

(v) वह व्यक्ति जिसको विनिमय विपत्र का भुगतान किया जाता है भुगतान पाने वाला व्यक्ति कहलाता है।

(vi) एक विनिमय विलेख को लेखक द्वारा हस्ताक्षरित किया जाना आवश्यक नहीं है।

(vii) एक विनिमय विलेख का मुक्त रूप से हस्तांतरण नहीं किया जा सकता है।

(viii) प्रतिज्ञा पत्र को मुद्रित करना अनिवार्य नहीं है।

(xi) विनिमय विपत्र पर समयावधि भुगतान निश्चित नहीं होता है।

स्वयं जाँचिए – 3

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :–

(i) वह व्यक्ति जिसका नाम प्रतिज्ञा पत्र पर भुगतान प्राप्ति हेतु अंकित किया जाता है .... कहलाता है।

(ii) हस्ताक्षर द्वारा विपत्र के स्वामित्व हस्तांतरण प्रक्रिया को............................. कहते है।

(iii) वह व्यक्ति जो निष्चित राषि के भुगतान के लिए प्रतिज्ञा पत्र लिखकर देता है।..............................कहलाता है।

(iv) वह व्यक्ति जो प्रतिज्ञा पत्र का बेचान अन्य व्यक्ति को करता है........................ कहलाता है।

स्वयं जाँचिए – 4

प्र0 1 विनिमय विपत्र को देय तिथि से पूर्व चुकाने के कारण स्वीकारकर्ता को प्राप्त होती है :–

(अ) छूट (ब) कमीशन (स) रिबेट (द) भत्ता राशि { }

प्र0 2 विनिमय पत्र स्वीकार किया जाता है :–

(अ) लेनदार द्वारा (ब) बिल के लेखक द्वारा (स) देनदार द्वारा (द) बैंक द्वारा { }

प्र03 विनिमय बिल की अवधि होती है :–

(अ) एक माह (ब) लेखक द्वारा स्वीकारकर्ता की सहमति से कितनी भी

(स) तीन माह (द) छः माह { }

प्र04 स्वीकारकर्ता की पुस्तक में बिल के अनादरण पर निम्नलिखित प्रविष्टि की जायेगी :–

(अ) B/R A/c Dr
To Cash A/c

(ब) B/P A/c Dr
To Drawers A/c

(स) B/R A/c Dr
To B/P A/c

(द) Cash A/c Dr
To B/P A/c

{ }

प्र.5 20,000 ₹ का तीन माह की अवधि का दीपक से प्राप्त बिल शिवम् ने अपने बैंक से 19,500 ₹ में भुनवा लिया। बैंक ने बिल के अनादरण की सूचना दी तथा 100 ₹ नोटिंग चार्जेज दिये । अनादरण पर शिवम् द्वारा अपने जर्नल में की जाने वाली प्रविष्टि होगी ।

(अ) Deepak's A/c Dr. 20,000/-
To B/R A/c 20,000/-
To Cash A/c 100/-

(ब) B/P A/c Dr. 20,000/-
Noting Charges A/c Dr. 100/-
To Shivam A/c 20100

(स) Bank A/c Dr. 19500/-
To Deepak's A/c 19,500/-

(द) Deepak's A/C Dr. 20,100/-
To Bank A/c 20,100/-

{ }

प्र06 3 माह के 8000/– ₹ के एक प्राप्य बिल को 10% वार्षिक बट्टे पर तुरन्त भुनाया गया बट्टे की राशि होगी :–

(अ) 100 ₹ (ब) 400 ₹ (स) 200 ₹ (द) 800 ₹ { }

प्र07 31 मार्च, 2010 को 3 माह की अवधि का एक बिल लिखा गया उसकी भुगतान तिथि होगी :–

(अ) 4 जून (ब) 30 जून (स) 3 जुलाई (द) 6 जुलाई { }

प्र08 अनुग्रह बिल का उद्देश्य होता है :–

(अ) क्रेता द्वारा माल के भुगतान की गारन्टी देना । (ब) ऋृणी द्वारा ऋृण का ब्याज अदा करना ।

(स) आर्थिक सहायता प्रदान करना । (द) व्यापार में धन का उपयोग करना ।

प्र09 निम्नलिखित प्रतिज्ञा–पत्र तथा विनिमय विपत्र में अन्तर का आधार नहीं हो सकता :–

(अ) पक्ष (ब) परिपक्वता तिथि (स) स्वीकृति (द) लेखक { }

प्र010 अनुग्रह बिल वह बिल है जो :–

(अ) वह ऋृणदाता अपने ऋृणी पर लिखता है। (ब) एक एजेन्ट अपने प्रधान पर लिखता है।

(स) व्यापारी अपनी वित्तीय सुविधा के लिए लिखते है। (द) किसी की प्रतिष्ठा के लिए लिखा जाता है।
{ }

अभ्यास प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Objective Type Questions)

प्र01 विनिमय विपत्र खाता कौन सा खाता है :–

(अ) व्यक्तिगत खाता (ब) नाम मात्र का खाता

(स) अवास्तविक खाता (द) वास्तविक खाता ( )

प्र02 विनिमय बिल का भुगतान किया जाता है :–

(अ) लेखक द्वारा (ब) स्वीकारकर्ता द्वारा

(स) बेचान करने वाले द्वारा (स) बेचान प्राप्तकर्ता द्वारा ( )

प्र0 3 विनिमय बिल का देय तिथि से पूर्व भुगतान कर देने पर जो राशि प्राप्त होती है, उसे कहते है :–

(अ) बट्टा (ब) छूट

(स) कमीशन (द) डूबत ऋण ( )

प्र0 4 राम ने श्याम पर एक अनुग्रह बिल 10,000/– ₹ का 3 माह की अवधि का लिखा जिसे श्याम ने स्वीकार कर लिया । राम ने उसे अपने बैंक से 18 प्रतिशत वार्षिक दर पर भुना लिया । प्राप्त धन को 3:2 के अनुपात में बांट दिया । श्याम को राशि प्राप्त होगी :–

(अ) 3,820 ₹ (ब) 4,000 ₹

(स) 5,820 ₹ (द) 6,000 ₹ ( )

प्र05 बेचान किये गये बिल के अनादरण पर बेचानकर्ता की पुस्तक में निम्नलिखित प्रविष्टी होगी :–

(अ) Endorsee A/c Dr
To B/P A/c

(ब) B/P A/c Dr
To B/R A/c

(स) Acceptor A/c Dr.
To Endorsee A/c

(द) B/R A/c Dr
To Acceptor A/c

( )

प्र06 शिवप्रकाश के पक्ष में हमारे द्वारा स्वीकृत बिल का भुगतान करने के लिए हमें दीपक से प्राप्त बिल शिवप्रकाश को देने पर निम्नलिखित प्रविष्टि होगी :–

(अ) B/R A/c Dr
To B/P A/c

(ब) Shiv Prakash's A/c Dr
To Deepak's A/C

(स) B/P A/c Dr
To B/R A/c

(द) Deepak's A/C Dr
To Shiv Prakash's A/C

( )

प्र07 प्रतिज्ञा–पत्र के पक्ष होते है :–

(अ) लेखक तथा स्वीकारकर्ता (ब) लेनदार तथा प्राप्तकर्ता

(स) लेखक, स्वीकारकर्त्ता तथा प्राप्तकर्त्ता (द) लेखक व प्राप्तकर्ता ( )

प्र08 नोटिंग चार्ज खाता किसके द्वारा नाम किया जाता है :–

(अ) लेखक द्वारा (ब) स्वीकर्त्ता द्वारा

(स) प्राप्तकर्ता द्वारा (द) कोई नहीं ( )

प्र09 विनिमय विपत्र के पक्षकार होते है :–

(अ) एक (ब) दो

(स) तीन (द) इनमें से कोई नहीं ( )

प्र010 1 मार्च 2010 को दीपक ने 3 माह का एक बिल शिवप्रकाश पर लिखा । शिवप्रकाश कौनसी देय तिथि को भुगतान करेगा :–

(अ) 1 जून (ब) 4 जून

(स) 1 मई (द) 4 अप्रेल ( )

अति लघुत्तरात्मक प्रश्न (Very Short Answer Type Questions)

प्र01 विनिमय बिल के कितने पक्षकार होते है। उनके नाम लिखों ।

प्र02 31 दिसम्बर 2009 को देय बिल बही का योग 50,000/– ₹ है। इसको 1 जनवरी 2010 को देय बिल खाते कैसे दिखायेगें ।

प्र03 राम ने 27.7.2010 को 6 माह की अवधि का एक बिल श्याम पर लिखा । श्याम ने 27.7.2010 को स्वीकार किया। इस बिल की भुगतान तिथि क्या होगी ।

प्र04 रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिये :–
Cash A/c DR 990
.... A/C DR 10
(Bill met before maturity)

प्र05 विमलेश ने कमलेश को अपने 2,000/– ₹ के देय विपत्र का भुगतान देय तिथि से एक माह पूर्व 20/– ₹ काटकर कर दिया । कमलेश की जर्नल में सम्बन्धित प्रविष्टि कीजिए ।

प्र06 व्यापारिक बिल एवं अनुग्रह विपत्र में दो अन्तर दीजिये :–

प्र07 कोमल ने कैलाश को अपने 1,000/– ₹ के अनादरित विपत्र के स्थान पर 200/–₹ नकद दिये और शेष राशि के लिए नवीन बिल स्वीकार किया जिसमें 14/– ₹ ब्याज एवम् 6/– ₹ प्रमाणन के सम्मिलित थे । कोमल की पुस्तकों में इसकी मिश्रित प्रविष्टि दीजिए ।

प्र08 विनिमय विपत्र के दो लक्षण बताईऐ ।

प्र09 मुद्रा की भाति विपत्र ....माध्यम का कार्य करते है।

प्र010 31 दिसम्बर 2010 को देय बिल बही का योग 5000/– ₹ था इसको 1 जनवरी 2010 को देय बिल खाते में कैसे दिखाएगें ।

लघुत्तरात्मक प्रश्न (Short Answer Type Questions)

प्र01 विनिमय बिल की परिभाषा दीजिये ।

प्र02 दर्शनी बिल और मियादी बिल में क्या अन्तर है ?

प्र03 व्यापारिक बिल व अनुग्रह बिल में क्या अन्तर है ?

प्र04 विनिमय बिल के भुनाने पर क्या प्रविष्टि की जाती है ?

प्र05 विनिमय बिल कितने प्रकार के होते है ? समझाईयें ।

प्र06 विनिमय विपत्र और प्रतिज्ञा–पत्र में अन्तर स्पष्ट कीजिए ।

प्र07 प्रतिज्ञा–पत्र के पक्षों की व्याख्या कीजिए ।

प्र08 उस बिल की देय तिथि बताईये जो 12 मई 2009 को लिखा गया तथा 20 मई 2009 को स्वीकार किया गया और जिसकी अवधि 30 दिन हो ।

प्र09 अजय द्वारा शिवप्रकाश पर लिखे गये 2,400/– ₹ के एक विनिमय बिल के भुगतान में शिवप्रकाश के दिवालिया हो जाने के कारण अजय को एक रूपये में 60 पैसे प्राप्त हुए। बताईये शिवप्रकाश इसके लिए कौनसे से खाते जमा करेगा और कितनी राशि से करेगा ।

प्र010 प्राप्य विपत्र पुस्तक का प्रारूप बनाइये ।

प्र011 देय विपत्र पुस्तक का प्रारूप बनाइये ।

प्र012 छूट का अर्थ समझाईयें ।

प्र013 विनिमय विपत्र का प्रारूप बनाईये ।

निबन्धात्मक प्रश्न (Essay Type Questions)

प्र01 "विनिमय विपत्र एक शर्त रहित आज्ञा पत्र है" क्या आप इस वाक्य से सहमत है?

प्र02 बिल की स्वीकृति से आप क्या समझते है ? स्वीकृति के विभिन्न प्रकार का उल्लेख करों ।

प्र03 बिल की अप्रिष्ठा से आप क्या समझते है ? बिल के अप्रितिष्ठित हो जाने पर धारक को क्या करना चाहिए ? इस विषय में आलोकन तथा प्रमाणन को स्पष्ट समझाईयें।

प्र04 अनुग्रह बिल किसे कहते है ? इसमें और अन्य व्यापारिक बिलों में क्या अन्तर है?

प्र05 प्राप्य विपत्र पुस्तक बनाने के उद्देश्य व लाभ बताईयें ।

प्र06 विनिमय बिल एवं प्रतिज्ञा पत्र में अन्तर बताईयें ।

प्र07 देय तिथी की गणना करने की प्रक्रिया को उदाहरण देकर समझाईयें ।

आंकिक प्रश्न (Numerical Questions)

1. 01 जनवरी 2010 को अनिल 800 ₹ का माल प्रकाश को बेचता है और इसके लिए 2 माह की अवधि का एक बिल प्रकाश पर लिख देता है। प्रकाश उस बिल को स्वीकार करके उसे अनिल को लौटा देता है। निश्चित तिथि पर बिल का भुगतान हो जाता है। दोनों पक्षों की बहियों में जर्नल प्रविष्टियां कीजिये ।
(On 1st Jan 2010 Anil sold goods to Prakash worth ₹800/- and draws a Bill at month for the same on Prakash. Prakash accepts the bill and returns at to Anil. The bill is paid on the due Date. Pass the Journal Entries in the Books of Both the Parties.)

2. निम्नलिखित दशाओं में बिलों की देय तिथियां ज्ञात कीजिएँ ।
(Calculate the maturity dates of the Bills in the following cases)

Date of Acceptance	Period
20th January, 2008	3 Months
1st Fabruary, 2008	2 months
28th March, 2008	1 months
12th July, 2008	30 days
15th July, 2008	30 days
30th September, 2008	2 months
30th September, 2008	3 months
27th October, 2008	4 months

Hints :- 2008 is the leap year and 15 August is Gazetted holidays)
(2008 में अधिवर्ष है तथा 15 अगस्त को राजपत्रित अवकाश है)

3. दीपक 12,000/- ₹ से शिवप्रकाश का ऋणी है अतः 4 अप्रैल 2010 को शिवप्रकाश 10,000/- ₹ का 3 माह की अवधि वाला एक बिल दीपक पर लिखता है जिसको दीपक स्वीकार कर लेता है। शिवप्रकाश उक्त बिल को 6 जून 2010 को एक ऋण के भुगतान में अरूण को बेचान कर देता है। निश्चित तिथि पर बिल का भुगतान हो जाता है। दीपक, शिवप्रकाश तथा अरूण की बहियों में जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिए ।
(Deeepak is indebted to Shiv Prakash for ₹12,000 Shivprakash therefore draws a bill for ₹10,000 at 3 months on Deepak on 4th April 2010 which is accepted by Deepak. Shivprakash ondorses the bill toe Arun in payment of a debet on 6th Jun.2010 on the due date the bill is met. Pass Journal entries in the Books of Deepak, Shiv Prakash & Arun.)

4. 1 मार्च 2010 को हेमन्त माल बेचने के बदले राहुल पर 6,000/- ₹ का 3 माह की अवधि वाला एक बिल लिखता है जिसको राहुल स्वीकार कर लेता है। 4 मार्च 2010 को हेमन्त उस बिल को अपने बैंक से 5 प्रतिशत वार्षिक दर से भुना लेता है। देय तिथि पर बिल का भुगतान हो जाता है। समस्त पक्षों की बहियों में जर्नल प्रविष्टियाँ दीजिये।
(Hemant draws a bill for ₹6,000 at three months on 1st march, 2010 Rahul for goods supplied to the latter. Hamant accepts the Bill, on 4th March, 2010, Rahul discount the bill with his bankers at 5% per annum. The bill is paid on maturite, Enter these transachtions in the Journal of all the Parties.)

5. 20 जनवरी, 2010 को लता 3,000/- ₹ से रेखा की ऋृणी है। वह इस रकम के लिए रेखा द्वारा लिखे गये 3 माह की अवधि के बिल को स्वीकार कर लेती है। रेखा उस बिल को संग्रह के लिए अपने बैंक में जमा करा देती है। निश्चित तिथि पर बिल का भुगतान हो जाता है। लता तथा रेखा की बहियों में जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये ।
(Lata ows ₹3,000 to Rekha on 20th January, 2010 for which he accepts a bill for 3 months drawn by Rekha. Rekha deposit the bill into his bank for collection. The bill is duly paid on maturity. Pass Journal entries in the books of Lata & Rekha.)

6. राधारमण एण्ड कम्पनी ने द्वारीकेश एण्ड कम्पनी को 10,000/– ₹ का माल बेचा तथा द्वारीकेश एण्ड कम्पनी पर 3 महीने का बिल लिखा । द्वारीकेश एण्ड कम्पनी ने बिल को स्वीकार कर लिया । निम्नलिखित प्रत्येक परिस्थितियों में यदि बिल का अनादरण भुगतान तिथि पर हो जाए तो दोनों ही पक्षों की पुस्तकों में कौन कौनसी प्रविष्टियाँ की जाँएगी :–

(i) यदि वे बिल को भुगतान तिथि तक रखते है।

(ii) यदि वे बिल को बैंक से भुना ले ।

(iii) यदि वे उसका बेचान रहमान एण्ड कम्पनी के पक्ष में कर दे ।

(iv) यदि वे उसे अपने बैंक के पास संग्रहण के लिए भेज दे ।

(Racharaman & Campany sold goods to Dwarikesh & company to the Value of ₹10,000 and drew upon the letter at 3 months for the amounts. Dwanikesh & Company accepted the bill show what entries would be possed in the books of both the parties under each of the following circumstances if the Bill is dishonoured on Due date :-

(i) If they retained the bill till Due date.

(ii) If they discovnted the bill with these Bankers.

(iii) If they endorsed it in favour of Rehaman & company.

(iv) If they sent it to their Banker for Collection.

7. 20 मई, 2010 को दीपिका ने निकिता को 7500/– ₹ का माल बेचा जिसके लिए निकिता ने चार माह की अवधि का बिल स्वीकार कर लिया । देय तिथि पर बिल को भुगतान के लिए प्रस्तुत किया गया परन्तु अप्रतिष्ठित हो गया और दीपिका को 10/– ₹ प्रमाणन शुल्क देना पड़ा। दीपिका तथा निकिता की बहियों में जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिए ।

(On 20th May, 2010 Deepika sold goods to Nikita for the Value of ₹7500, taking a bill at 4 months for the amount on the due date the bill was presented for payment but was dishonoured. Deepika paid ₹10 as nothing charges. Pass Journal entries in the books of Deepaka & Nikita.)

8. 15 जुलाई, 2010 को शिवम् ने 800/– ₹ का एक बिल तीन माह की अवधि का पूनित पर लिखा जिसे पूनित ने स्वीकार कर लिया । 15 जुलाई, 2010 को शिवम् ने वह बिल अपने बैंक से 5 प्रतिशत वार्षिक दर से भुना लिया । देय तिथि को बिल अप्रतिष्ठित हो गया, बैंक ने 10/– ₹ प्रमाणन शुल्क चुकाया । शिवम् तथा पूनित की जर्नल में इनकी प्रविष्टियाँ कीजिये ।

(Shivam drew a bill on Punit Fer ₹800/- at 3 months which the latter accepts. On 15th July, 2010 Shivam discounts the same with his bankers at 5% p.a. on the due date the bill in dishonovred and the bank pays nothing charges ₹10 pass Journal entires in the books of Shivam & Punit.)

9. 1 जनवरी, 2010 को अशोक ब्रदर्स ने लक्ष्मी नारायण एण्ड कम्पनी से 15,000/– ₹ की तीन महीने की स्वीकृति प्राप्त की । लक्ष्मी नारायण एण्ड कम्पनी बिल का भुगतान करने में असमर्थ होने के कारण अशोक ब्रदर्स के पास भुगतान तिथि से पूर्व पहुँची तथा उससे पुरना बिल रद्द करने के लिए तथा 3 महीने के लिए नया बिल 12% ब्याज सहित लिखने की प्रार्थना की । अशोक ब्रदर्स ने उनके अनुरोध को स्वीकार किया । नये बिल का भुगतान तिथि पर भुगतान कर दिया गया । दोनों पक्षकारों की पुस्तकों में ऊपर दिए गए लेनदेनों को दर्ज करने के लिए आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ दीजिए ।

(On 1st January, 2010 Ashok Bros. received an acceptance. Of ₹ 15,000 for 3 months from Laxmi Narayan & Co. being unable to meet the bill approached Ashok Bros. before the due of bill and requested them to cancel the old bill and draw a new bill for 3 months plos 12% interest. Ashok Bros. acceded to the request The new bill was duly met on the date of maturity Pass necessary journal entries to record the above transactions in the books of both the parties.)

10. राजेश माल के विक्रय के बदले प्रेम प्रकाश पर 20,000/– ₹ का 4 माह की अवधि का एक बिल 30 नवम्बर, 2009 को लिखता है जिसे प्रेम प्रकाश स्वीकार कर लेता है। राजेश उस बिल को 3 दिसम्बर, 2009 को श्रवण से 5 प्रतिशत वार्षिक दर से भुना लेता है। देय तिथि पर प्रेम प्रकाश की बैंक बिल को अप्रितिष्ठित कर देती है और श्रवण 10/– ₹ प्रमाणन शुल्क चुकाता है। 10 मार्च, 2010 को प्रेम प्रकाश 10,000/– ₹ रौकड़ राजेश को देता है और शेष रकम के लिए 3 माह की अवधि का एक बिल 4 प्रतिशत वार्षिक ब्याज जोड़कर स्वीकार कर लेता है। इस नये बिल का भुगतान देय तिथि पर कर दिया जाता है। राजेश, प्रेम प्रकाश तथा श्रवण की जर्नल में इससे सम्बन्धित प्रविष्टियाँ कीजिए ।

(Rajesh draws a bill of exchange on Prem Prakash for goods supplied for ₹20,000 on 30th Nov. 2009 at 4 months and on Prem Prakash's acceptance of the same discount its with sarwan on Dec. 3, 2009 at 5% per annum on due date the bill was dishonoured by Prem Prakash's Bankers on presentations and sarwan had to pay ₹ 10 as Nothing charges on 10th March, 2010 Prem Prakash Pays Rajesh cash

₹10,000 in part payment & accepts a fresh bill payable at three months for the balance plus interest at 4% p.a. This bill was duly ment on maturity pass Journal entires in the books of Rajesh, Prem Prakash & Sarwan.)

11. 08 अक्टूबर, 2009 को शारदा ने 5,000/– ₹ का माल सन्तोष से खरीदा और 4 महीने की अवधि का एक बिल इस रकम के लिए स्वीकार कर लिया । 9 अक्टूम्बर, 2009 को सन्तोष ने यह बिल अपने बैंक से 5 प्रतिशत वार्षिक दर से भुना लिया । बिल की देय तिथि पर शारदा ने बिल का भुगतान करने में असमर्थता प्रकट की । बैंक को 15/– ₹ प्रमाणन शुल्क देना पड़ा । शारदा ने 15 फरवरी, 2010 को 2,000/– ₹ रौकड़ चुका दिये और शेष रकम के लिए 6% वार्षिक ब्याज लगाकर 4 माह की अवधि का एक बिल स्वीकार कर लिया । नये बिल की देय तिथि पर शारदा दिवालिया घोषित हो गयी और सन्तोष को उसकी सम्पति से रूपये में केवल 50 पैसे प्राप्त हुए । उपर्युक्त लेनदेनों को शारदा तथा सन्तोष की जर्नल में लिखिये तथा शारदा की खाता बही में सन्तोष का खाता बनाइएँ ।

(On 8th Oct, 2009 Sharda Purchosed goods worth ₹ 5,000 from Santosh and accepted a 4 months bill for the same on 9th Oct, 2009 Santosh Discounted this bill with his bankas at 5% p.a. on the due date sharda expresses his inability to meet the bill. The bank had to pay ₹15 as nothing charges on 15th Feb. 2010 Sharda pays ₹ 2,000 in cash and accepts a new bill for the balance payable at four months with interest at 6% p.a. on the due date of the new bill sharda became insolvent and Santosh received only 50 paisa in a Rupee out of his property pass necessary Journal entires in the Books of Sharda & Santosh and also prepare santhosh's A/c in Sharda's Ledger.)

12. दलाल की पुस्तकों में निम्नलिखित बिलों से सम्बन्धित लेनदेनों की जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिए :–

(अ) दलाल द्वारा लक्ष्मण को दी गई 16,000/– ₹ की स्वीकृति रद्द कर दी गई, जिसके बदले में तुरन्त ही 6,000/– ₹ नकद व शेष राशि के लिए 50/– ₹ ब्याज सहित का नया बिल स्वीकार किया ।

(ब) पिंकी द्वारा रेखा को 3,000/–₹ की स्वीकृति को 100/–₹ बट्टा लेकर नकद भुगतान करके खत्म कर दिया गया ।

(स) दलाल द्वारा शर्मा को दी गई 6,000/– ₹ की एक स्वीकृति उतनी ही राशि की रेखा से मिली स्वीकृति द्वारा रद्द कर दी गई ।

(द) दलाल को प्राप्त 10,000/– ₹ की एक स्वीकृति जिसे संग्रह के लिए बैंक में भेज दिया गया था, अप्रतिष्ठित होने के कारण बैंक ने वापस कर दी।

(य) दलाल को प्राप्त माहेश्वरी की 8,000/– ₹ की एक स्वीकृति जिसे पंवार को बेचान कर दिया था, भुगतान न होने के कारण अप्रतिष्ठित हो गई ।

(Journalise the following transactions relating to bills in the books of dalal)

(a) Dalal's acceptance to Laxman for ₹ 16,000 was discharged by in immediate cash payment ₹6000 and an acceptance or a fresh Bill for the balance plus ₹ 50 interest.

(b) Pinky's acceptance to Rekha for ₹3,000 was discharged by an immediate cash payment at a discount of ₹100.

(c) Dalal's acceptance to sharma for ₹ 6,000 was discharged by Rekha acceptance to Dalal for a similar amount.

(d) An acceptance received by dalal for ₹ 10,000 which was sent to the bank for collection was returned by the bankas being dishonoured.

(e) Panwan's acceptance to Dalal for ₹ 8,000/- which was on dorsed to Mahesh wari was dishonoured by non payment.

13. लालचन्द ने जो बंशीलाल का कर्जदार था अपने 5,000/– ₹ के कर्जे को चुकाने के लिए दो बिल बराबर रकमों के स्वीकार किये । पहला बिल दो माह की व दूसरा तीन माह की अवधि का था। बंशीलाल ने प्रथम बिल को अपने कर्जे को चुकाने के लिए राधारमण को बेचान कर दिया और दूसरे बिल को बैंक से भुना लिया जिससे उसे 2,700/– ₹ प्राप्त हुए । पहले बिल की रकम निश्चित तिथि पर चुका दी गई परन्तु दूसरा बिल अप्रतिष्ठित कर दिया गया और बैंक ने इस बिल पर 30/– ₹ नोटिंग शुल्क दिया । बंशीलाल ने बिल की रकम बैंक को चुका दी । लालचन्द 6% वार्षिक ब्याज देने को तैयार हो गया और दूसरा बिल, पहले की रकम का स्वीकार कर लिया और नोटिंग खर्चा व ब्याज नकद चुका दिया । बंशीलाल व लालचन्द की जर्नल में उपर्युक्त व्यवहारों का लेखा कीजिए ।

(Lal chand, who was debtor of Banshi lal for ₹ 5,000 accepted two bills of equal amounts in order to pay his debt. The First bill was for two months date and the second for three months. Banshi lal endorsed the first bill to Radharman in payment of a debt and discounted the second with his bank for ₹2,700. The First bill was paid on paid ₹ 30 as Notting charges. Banshi Lal paid the amount of the bill to the bank. Lal chand accepted a new bill for the amount of the old bill and was ready to pay interest @ 6% p.a. He paid the amount of Nothing charges and interest in cash. Enter the above transactions in the Journal of Lal chand & Banshi Lal.)

14. शिवप्रकाश अपनी और प्रेमप्रकाश की आपसी सहायता के लिए एक तीन माह का 11,200/– ₹ का बिल 1 जनवरी, 2010 को प्रेमप्रकाश पर लिख देता है जिसे प्रेमप्रकाश स्वीकार कर लेता है। शिवप्रकाश इस बिल को 5 जनवरी, 2010 को 4% बट्टे पर बैंक से भुना लेता है और आधी रकम प्रेमप्रकाश को भेज देता है। प्रेमप्रकाश भी उपर्युक्त उद्देश्य से ही 15, मार्च, 2010 को तीन माह का 3000/–₹ का एक बिल शिवप्रकाश पर लिखता है। जिसे शिवप्रकाश स्वीकार कर लेता है। प्रेमप्रकाश इस बिल को 4% बट्टे की दर से भुना कर आधा रूपया शिवप्रकाश को भेज देता है। 31 मार्च, 2010 को प्रेमप्रकाश दिवालिया हो जाता है और उसकी जायदाद से 30 जून, 2010 को प्रथम तथा अन्तिम हिस्सा रूपये में 50 पैसे प्राप्त होते है। उपर्युक्त का लेखा शिवप्रकाश की जर्नल में कीजिए तथा उसकी खाताबही में प्रेमप्रकाश का खाता भी तैयार कीजिये ।

(Shiv Prakash for the mutual acconmod ation of himself and Prem Prakash drawn on the latter accept bills of exchange at three month for ₹ 11,200 dated 1st Jan. 2010. Shiv Prakash discounts the bill on 5th Jan. 2010 with his banker, the rate of Discount being 4% and remits half the proceeds to Prem Prakash. Prem Prakash for a similar purpose drawn a bill at there months on shiv Prakash on 15th march, 2010 for ₹ 300 which the latter accepted. Prem Prakash discounted the bill @ 4% p.a. with bank and remits half the proceeds to shiv prakash. Prem Prakash became bank rupt on 31st March, 2010 and First and Final divided of 50 p. in a rupee is received from his estate on 30th June, 2010 Pass necessary Journal antries in the books of Shiv Prakash and also prepose Prem Prakash A/c in his books)

15. 1 मई, 2010 को उषा ने एक तीन माह का 16,000/– ₹ का बिल राधा पर लिखा जिसे राधा ने स्वीकार कर लिया । 5 मई को उषा ने वह बिल 5% वार्षिक दर पर भुना लिया और आधी रकम राधा को भेज दी । 1 जून, 2010 को राधा ने एक बिल 3 माह का 1200/– ₹ का उषा पर लिखा जिसे उषा ने स्वीकार कर लिया । राधा ने बिल 6% की दर पर भुनाकर आधी रकम उषा को भेज दी । निश्चित तिथि पर उषा ने अपने बिल का भुगतान कर दिया किन्तु राधा अपनी स्वीकृति का भुगतान न कर सकी और उसका भुगतान भी उषा को करना पड़ा । फिर उषा एक नया बिल पुराने बिल की रकम तथा 5% वार्षिक ब्याज सहित 3 माह की अवधि का राधा पर लिख देता है जिसे राधा स्वीकार कर लेती है। 1 अगस्त, 2010 को राधा दिवालिया हो जाती है और उसकी जायदाद से ₹ में 50 पैसे 31 अक्टूबर को प्राप्त हो जाते है। उषा की खाता बही में राधा का खाता बनाईयें ।

(On 1st May, 2010 Usha drewi and Radha accepted a bill at three months for₹16,000 on 5th may usha discounted the bill at 5% and remitted half the proceeds to Radha on 1st June, 2010 Radha drewi and Usha accepted a bill at 3 months for ₹1200 Radha discounted the bill at 6% p.a. and remitted half the proceeds to usha. On maturity Usha met his accepteince but Radha Failed to meet his and recourse was had to usha, usha then drewi and Radha accepted a three months bill for the Amount of the original bill plus interest at 5% p.a. on Radha on 1st Aug, 2010 Radha became insolvent and a first and Final divided of 50 p. in a rupee was received from his estate on 31st Oct. Write up Radha's Account in the Leger of Usha.)

16. अरूण 1500/– ₹ का एक बिल चार महिने की अवधि का शिवम् पर लिखता है जिसको शिवम् परस्पर सहायता के लिए स्वीकार कर लेता है जिसमें ⅓ भाग अरूण का तथा ⅔ भाग शिवम् का होगा। अरूण उस बिल को 6% वार्षिक बट्टे पर बैंक से भुना लेता है और ⅔ भाग शिवम् को भेज देता है। बिल की भुगतान तिथि के आसपास दोनों ही बिल का भुगतान करने में असमर्थ है बल्कि उनको और सहायता की आवश्यकता है। अतः शिवम् एक 2500/– ₹ का बिल चार माह की अवधि का अरूण पर लिख देता है जिसको अरूण स्वीकार कर लेता है। शिवम इस बिल को 6 प्रतिशत वार्षिक बट्टे पर बैंक से भुना लेता है और इस रकम में से पहला बिल भुगतान करने के बाद शेष रकम का आधा भाग अरूण को भेज देता है। दूसरे बिल के भुगतान से पूर्व अरूण दिवालिया हो जाता है और शिवम् को उसकी जायदाद से रूपये में से 50 पैसे प्राप्त हुए । दोनों पक्षों में जर्नल में प्रविष्टियाँ कीजिए तथा शिवम् की बहियों में अरूण का खाता बनाईयें ।

(Arun draws a bill of exchange payable at 4 months after date on shivam & Shivam accepts the same for the mutual accommodation of both of them to the extent of ⅓ to Arun and ⅔rd to shivam, Arun discount the same @ 6% p.a. with his bankers and remits ⅔rd of the proceeds to Shivam Near about the due date both of them are unable to contribute towads the payment of the bill and on the other hand are in need of further accommodation, Shivam therefore of the bill and on the other hand are in need of further accommodation, Shivam there fere, draws a bill for ₹2500 payable after four months on Aurm, which is accepted by Arun. The second billis discounted @ 6% p.a. with the bank & with he the help of which Shivam pays the First bill and remits half or balance of proceeds to Arun. Before the due date to of the sedonde bill Arun becomesinsolvent and Shivam receives a first and final dividend of 50 paise inarupee pass necessary Journal entries in the books of both the parties and also prupuse Arun A/c in the books of Shivam.)

17. 1 अक्टूम्बर, 2009 को अनिल 20,000 / — ₹ का 2 माह की अवधि का एक बिल प्रकाश पर लिखता है जिसे वह पारस्परिक सहयोग के लिए स्वीकार कर लेता है। अनिल एवं प्रकाश प्राप्त राशि व खर्च को क्रमश 3 : 2 के अनुपात में बॉटने को सहमत हो जाते है। 4 अक्टूम्बर, 2009 को अनिल इस बिल को अपने बैंक से 8800 / — ₹ में भुना लेता है और प्रकाश का हिस्सा उसे चैक द्वारा भेज देता है। 1 दिसम्बर, 2009 को प्रकाश एक बिल 15,000 / — ₹ का अनिल पर 3 माह की अवधि का लिखता है जिसे अनिल स्वीकार कर लेता है। 4 दिसम्बर, 2009 को प्रकाश इस बिल को अपने बैंक से 15,000 / — ₹ में भुना लेता है और अनिल का भुगतान करने के पश्चात् शेष राशि को उसी अनुपात में अनिल को चैक द्वारा भेज देता है। 15 फरवरी, 2010 को अनिल दिवालिया हो जाता है और उससे एक रूपये 75 पैसे के हिसाब से भुगतान प्राप्त होता है। उपर्युक्त लेनदेनों की अनिल की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये ।

(Anil draws a Bill of exchange payble after two months on Prakash for ₹ 20,000 on 1st Oct, 2009 which Prakash accepts for mutual accommodation. Anil & Prakash to share the amount of the bill and exponses in the ratio of 3 : 2 respectively. On 4th Oct, 2009, Anil discounts the bill with his bank for ₹8800 and remits Prakash's share to him by cheque on 1st Dec, 2009 Prakash draws a bill of exchange on Anil for ₹ 15,000 for three months which is accepted by Anil on 4th Dec. 2009 Prakash discounts this bill with his bank for ₹15000 and after making payment of the first bill to Anil, remits the balance of amount to anil by cheque in the same proportion on 15th Feb, 2010 Anil becomes insolvent and 75 paise in a rupee is received from him pass necessary Journal entries in the books of Anil.)

18. निम्नलिखित व्यवहारों को पिंकी की पुस्तकों में प्राप्य बिल व देय बिल बही में लिखिए :—

2010		₹
Apr. 1.	रेखा से 2 माह के बिल की स्वीकृति प्राप्त हुई । (Received From Rekha his acceptance at 2 months)	280
Apr.5.	दीपिका के 3 माह के विपत्र को स्वीकृत किया । (Accepted Depika's draft for 3 months)	500
Apr.10.	सुरभि से 3 माह का विपत्र प्राप्त हुआ । (Received a bill from shurbhi for 3 months)	800
Apr.16	कुमारी को 2 माह की स्वीकृति प्रदान की । (Acceptance given to Kumari at 2 months)	400
Apr.18.	पूजा से 5 माह का एक बिल प्राप्त हुआ । (Received a bill from Pooja for 5 months)	500
Apr.21	मनिषा से 3 माह का प्रतिज्ञा पत्र प्राप्त हुआ । (Received a Promissory Note From Manisha for 3 months)	205
Apr.22	ललीता के प्रतिज्ञा पत्र को बैंक से 200 / — ₹ में भुनाया । (Lalit's Promissory Note discounted with bank for ₹200/-)	
Apr.30	कंचन के 4 माह बाद देय होने वाले 760 ₹ के ड्राफ्ट को स्वीकार किया । (Accepted Kanchan's draft for ₹760 payable after 4 months)	

स्वयं जांच उत्तर 1 :— (i) असत्य (ii) सत्य (iii) असत्य (iv) असत्य (iv) असत्य (v) सत्य (vi) असत्य (vii) असत्य (viii) असत्य (ix) असत्य ।

स्वयं जांच उत्तर 2 :— (i) स्वीकारकर्त्ता (ii) बेचान (iii) लेखक (iv) बेचानकर्ता

स्वयं जांच उत्तर 3 :— (i) परक्राम्य (ii) लेखक, स्वीकारकर्त्ता (iii) देनदार, लेनदार (iv) तीन (v) दो (vi) स्वीकारकर्त्ता (vii) हुंडी (viii) देय, तीन ।

स्वयं जांच उत्तर 4 :— 1. (स) 2. (स) 3. (ब) 4. (ब) 5. (द) 6. (स) 7. (स) 8. (स 9. (ब 10. (स)

बहुचयनात्मक प्रश्न — 1. (द) 2. (ब) 3. (ब) 4. (अ) 5. (स) 6. (स) 7. (द) 8. (ब) 9. (स) 10. (ब) ।